परमपिता शिव परमात्मा

गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 52, अंक 7, जनवरी, 2017
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

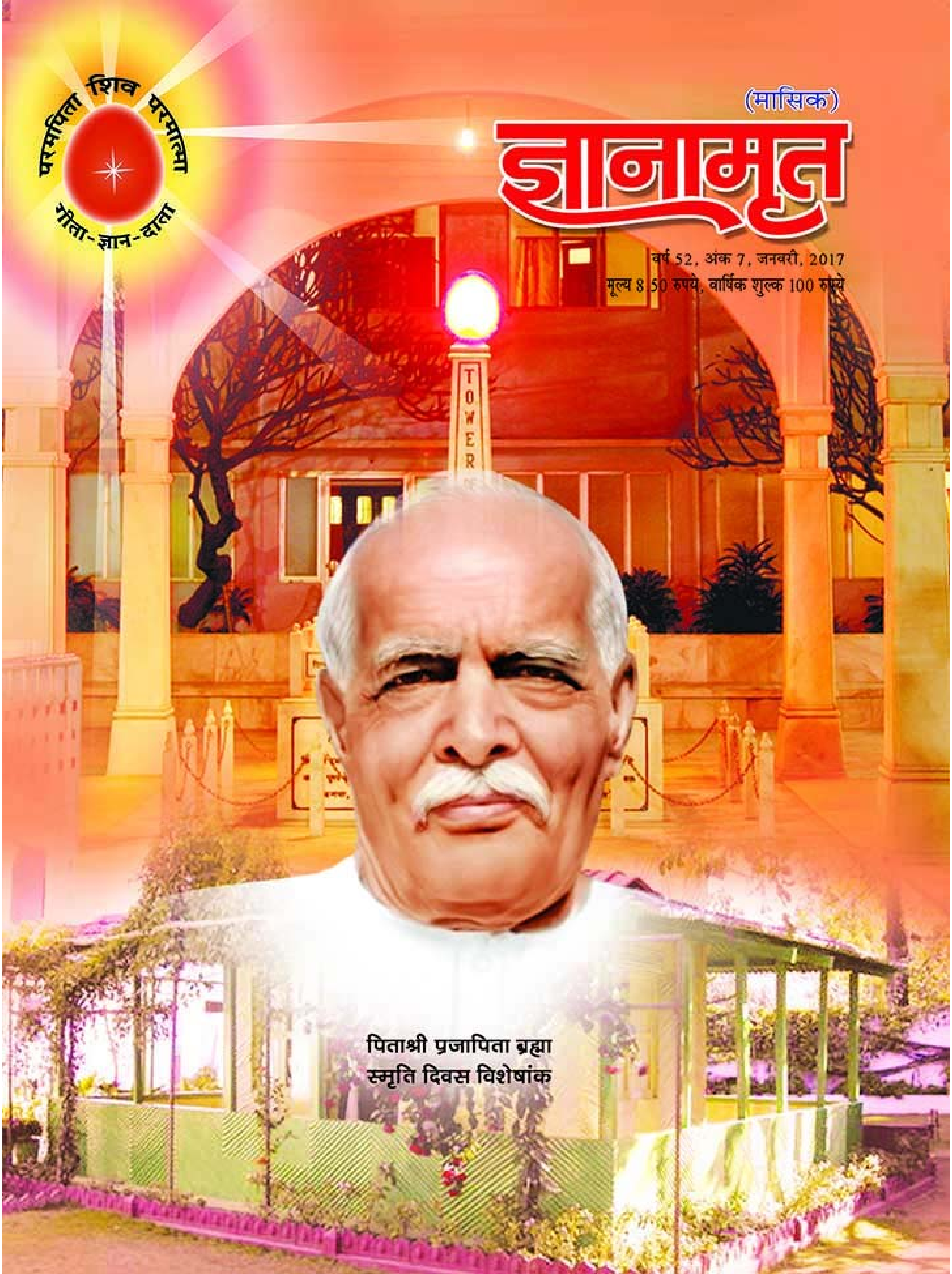

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा
स्मृति दिवस विशेषांक

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

1.नई दिल्ली- ब्रह्माकुमार कमान्डर शिव सिंह, प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी से हाथ मिलाते हुए। साथ में जलसेनाध्यक्ष एडमिरल भ्राता लाम्बा जी तथा अन्य। **2.अजमेर (धोलाभाटा)-** राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कल्याण सिंह को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् ब.कु.योगिनी बहन, ब.कु.कल्पना बहन तथा डॉ.पी.आर. गुप्ता उनके साथ। **3.अहमदनगर-** योगगुरु बाबा रामदेव को एक हजार एक सौ ग्यारह गुलाबों से बना गुलदस्ता भेंट करते हुए ब.कु.डॉ.दीपक हरके, ब.कु.राजेश्वरी बहन तथा अभिनेत्री बहन राजश्री लांडगे। **4.हसनपुर-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.इंदिरा बहन। **5.ग्रेटर नोएडा-** तम्बाकू नियन्त्रण पर आयोजित सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज के स्टाल का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री भ्राता जगत प्रकाश नड्डा। साथ में हैं ब.कु.प्रीति बहन तथा ब.कु.डॉ.बनारसी भाई। **6.रेणुकाजी (नाहन)-** हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता आचार्य देवव्रत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.रमा बहन। **7.कड़ी-** गुजरात के उप-मुख्यमंत्री भ्राता नितिन भाई पटेल, राज्य प्रमुख जीतू भाई वागानी तथा सांसद जयश्री बहन पटेल, ब.कु.संगीता बहन को शाल, मेमेन्टो और सर्टीफिकेट देकर सम्मानित करते हुए। **8.रामपुर बुशैहर-** हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता आचार्य देवव्रत को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब.कु.आशा बहन तथा अन्य बहनें। **9.ओ.आर.सी.(गुरुग्राम)-** 'स्प्रीचुअलिटी इन रिसर्चर्स' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद इन्टरफेथ के अध्यक्ष भ्राता मदन मोहन वर्मा, दूरदर्शन एवं प्रसार भारती की पूर्व अतिरिक्त महानिदेशिका बहन ऊषा भसीन, ब.कु.आशा बहन, डी.आर.डी.ओ.के वैज्ञानिक डॉ.सुशील चन्द्र, ब.कु.अल्का बहन, ब.कु.सरोज बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **10.गोटेगाव-** मध्य प्रदेश के राजस्व एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्री भ्राता उमाशंकर गुप्ता को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.मीना बहन।

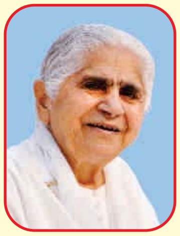

नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

नवयुग निर्माता, भाग्यविधाता, परमपिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु भोलेनाथ भगवान के दिल के दुलारे, नयनों के तारे सर्व बहनों तथा भाइयो,

पुरानी और नई दुनिया के संगम पर, नववर्ष का आगमन नई दुनिया की नई स्मृतियों को ताजा कर रहा है। 'आज और कल' इन दो शब्दों में समाए हुए इस सृष्टि चक्र में आज हम संगमयुग पर हैं और कल सतयुग में होंगे। भारत फिर से सच्चे अर्थों में (भा = प्रकाश + रत = सम्पन्न) प्रकाशमान बनेगा जहाँ हर नर-नारी चरित्र सम्पन्न, गुण सम्पन्न और प्रसन्नता सम्पन्न होंगे।

ऐसे स्वर्णिम भारत को भू पर साकार करने के लिए आइये हम मुश्किलों के बीच मुसकराना सीखें। परिस्थितियों को स्वस्थिति से जीतें और निन्दा तथा नींद पर विजय प्राप्त कर वन्दनीय बनें। हम यह न कहें कि किसने ऐसा किया है बल्कि स्वयं करके दिखाएँ। कथनी-करनी एक करके 'तुरन्त दान महापुण्य' के भागी बनें।

समय के साथ बदलते हालातों में समायोजन करते हुए अपने ख्यालातों को बदल लें। वस्तुओं के प्रति अनासक्त भाव और व्यक्तियों के प्रति आत्मिक भाव रखकर निर्लिप्त और न्यारे रहें। एक हाथ से कर्म करें और दूसरे हाथ से धर्म अर्थात् श्रेष्ठ गुणों को पकड़कर रखें। कर्म करते भी मनसा शक्ति द्वारा शान्ति की किरणें समस्त भूमण्डल के जड़-चेतन पर बिखेरते रहें।

मैं सारी दुनिया को कहती हूँ, कल किसने देखा, जो करना है अब कर लें। सृष्टि के महापरिवर्तन से पहले स्थापना का कार्य स्वयं भगवान धूमधाम से करवा रहे हैं इसलिए 'एक के हैं और एक हैं' एकता की इस दृढ़ भावना के साथ असम्भव को सम्भव कर दिखाएँ। संस्कार मिलन की रास द्वारा अलौकिक प्रेम को प्रत्यक्ष करें और कमजोर को भी शक्तियों के पंख देकर ऊँचाइयों की ओर ले चलें।

परिवर्तन की इस नूतन वेला में आप सभी को नववर्ष की, नवयुग की, पुरुषार्थ में नवीनता की, सेवा की नवीन योजनाओं की बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन
बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- ब्रह्मा बाबा का भौतिक व्यक्तित्व.. *(संजय की कलम से)*............. 4
- उच्च साधन तथा सादगी के प्रेरक *(संपादकीय)* 5
- बाबा ने लिखा, तुम ही 7
- यह दिल हर पल गाता रहता...12
- रोम-रोम में शान्ति भर गई.....14
- संन्यासी से बना ब्रह्माकुमार 15
- आदर्श राजयोगी 17
- बाबा ने कहा, हिम्मत रखी 19
- शिवा से शिव की अनुभूति....20
- बाबा ने कहा, सैम्पल 21
- बाबा ने कहा, बच्ची 22
- 'पत्र' संपादक के नाम.........23
- बाबा ने कहा, बच्ची को 24
- ओ ब्रह्मा बाबा.. *(कविता)* 25
- बाबा ने मेरा भय निकाल दिया 26
- बाबा ने कहा, बच्ची सदा 27
- श्रद्धांजलि 27
- बाबा से मिला 28
- श्रद्धांजलि 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- बाबा ने कहा, बच्ची, नम्रता ...32
- नया वर्ष करता.. *(कविता)* 34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com

ब्रह्मा बाबा का भौतिक व्यक्तित्व शुद्धता की प्रेरणा देता था

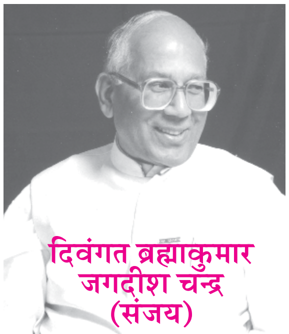

दिवंगत ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र (संजय)

ब्रह्मा बाबा ने राजयोग की पवित्र शक्तियों के जरिए अपने वृद्ध शरीर को ऐसा साध रखा था कि नब्बे वर्ष की आयु में भी उनकी व्यस्त नित्यचर्या को देखकर, जोकि प्रात: 3 बजे से रात्रि 10.30 या 11 बजे तक चलती थी, लोगों को बेहद हैरत होती थी। जब कभी बाबा के व्यवसाय के दिनों के कोई परिचित व्यक्ति उनसे मिलते थे तो यही कहते थे कि बाबा वैसे ही दिखाई देते हैं जैसे कि तीस या चालीस वर्ष पहले दिखाई देते थे। उनमें से कुछ जो उस समय नवयुवक थे, अब 50-55 वर्ष की आयु में भी बहुत बूढ़े दिखाई देते थे। उनमें से कई लोगों के दांत टूट चुके थे, शरीर शिथिल हो चुके थे तथा सिर पर बहुत कम केश रह गये थे क्योंकि उन्होंने भय, चिंता तथा काम-वासना पूर्ण जीवन बिताया था। जब वे 90 या अधिक वर्षों की आयु के इस दमकते हुए मुखमण्डल वाले युवक (बाबा) से मिले तो बाबा से अपनी तुलना करते हुए यह महसूस किया कि किसी योगी का जीवन कितना चमत्कारी होता है! वे बाबा का सादर अभिवादन करते थे और उनके मुख से मानो कि एक साथ यही शब्द निकलते थे, ''दादा आपने सचमुच अपने जीवन को जीने योग्य बनाया है जबकि हमने उसे बरबाद कर दिया। आपमें नि:संदेह एक श्रेष्ठ, अदृश्य शक्ति कार्य कर रही है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि साधारण आभासित होने वाला ब्रह्मा बाबा का शरीर लोगों को अपना जीवन हीरे की तरह सुंदर, मूल्यवान तथा उदात्त बनाने की प्रेरणा कैसे देता था।

नारियों का उद्धार

नारियों के उन्नयन के लिए बाबा ने जितना कार्य किया है उतना किसी ने भी नहीं किया है। उन्होंने पुरुषों के प्रभुत्व से उनकी मुक्ति का झण्डा एक आध्यात्मिक ढंग से उठाया। उन्होंने 'वन्दे मातरम्' के नारे को एक नया अर्थ दिया। उन्होंने पुरुषों से कहा कि अपने अहं को त्याग दो और नारियों को अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने दो क्योंकि नारियों में विशेष गुण होते हैं। बाबा ने नारियों के एक दल से, जिनमें से अनेक नारियाँ अर्द्ध-शिक्षित, कमजोर, असहाय, बूढ़ी और समाज द्वारा उपेक्षित थीं, विश्व में एक आध्यात्मिक क्रांति-सेना का निर्माण किया। सदियों से स्त्रियाँ पुरुषों की गुलाम रही थीं और अब बाबा ने इस गुलामी को समाप्त कर दिया। सच्चे ज्ञान ने असहाय को सहायक बना दिया। बाबा ने महिलाओं को झूठे सिद्धांतों तथा विश्वासों के विरुद्ध हुंकारना सिखाया।

असंभव को संभव कर दिया

बाबा में विभिन्न संस्कारों तथा मनोवृत्तियों वाले आध्यात्मिक शिशुओं को प्रेम के बंधन में बाँधे रखने की विलक्षण क्षमता थी। इस विश्व में, जहाँ माया को जीतना असंभव माना जाता है, उन्होंने माया को जीतने का एक परिपूर्ण आदर्श प्रस्तुत किया। बड़े-बड़े संत और महात्मा ब्रह्मचर्य के मार्ग पर लड़खड़ा गये किंतु जैसा कि पहले बताया जा चुका है, बाबा ने एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। बाबा की प्रेरणा से हजारों विवाहित युवकों तथा युवतियों ने तथा अविवाहित बालक और बालिकाओं ने 'पूर्ण ब्रह्मचर्य' का मार्ग अपनाया। संभवत: इसीलिए ब्रह्मा के नाम पर 'ब्रह्मचर्य' शब्द की उत्पत्ति हुई।

वस्तुत : सेवायोग्य

इस प्रकार बाबा का हर विचार, शब्द और कार्य लोगों

(शेष...पृष्ठ 11 पर)

सम्पादकीय

उच्च साधन तथा सादगी के प्रेरक ब्रह्मा बाबा

शिव बाबा तो सर्व-कल्याणकारी, सर्वसमर्थ, सर्व गुणों के भण्डार और परिपूर्ण हैं ही परन्तु साकार ब्रह्मा बाबा के जीवन में भी इतने महान गुण हम अनुभव करते कि वे सबसे न्यारे, प्यारे और अद्‌भुत व्यक्तित्व के मालिक मालूम होते। साथ-साथ ऐसा भी होता कि जो लोग उनके सम्पर्क में आते उन्हें भी उनके गुणों से इतनी प्रेरणा मिलती कि वे भी वैसे ही पावन बनने शुरू हो जाते, जैसे कि पारस के साथ लगने से पत्थर भी सोना हो जाता है अथवा सच्चे चन्दन के निकट के वृक्ष भी अपने में सुगन्धि भरकर, सुगन्धि देने लगते हैं।

साधन उच्च

कार्य को सम्पन्न करने के लिए बाबा सदा साधन उच्च अपनाते। वे कभी ज्ञान-विरुद्ध अथवा निम्न कोटि का साधन न अपनाते और न अपनाने देते। यदि वे चाहते तो इस अच्छे कार्य के लिए उन्हें अतुल धन मिल सकता था परन्तु उन्होंने सदा यह नियम अपने सामने रखा था कि इस ईश्वरीय कार्य में ऐसे मनुष्यों से धन नहीं लिया जा सकता जिनके जीवन में ब्रह्मचर्य की धारणा न हो तथा जो ईश्वरीय योग से युक्त न हों। ऐसे कई अवसर सामने आए जबकि ब्रह्माकुमारी बहनों को उनके लौकिक सम्बन्धियों ने चेक (Cheque) भेजे या इस संस्था के प्रशंसक लोगों ने धन-दान देने की इच्छा प्रकट की परन्तु बाबा ने उन लोगों से पैसे लेने से इनकार कर दिया जोकि अपने जीवन को पवित्र और योगयुक्त बनाने का पुरुषार्थ न करते हों।

इस नियम के कारण बहुत-से लोग प्राय: यह भी प्रश्न करते रहते कि यज्ञ का खर्च कैसे चलता है अथवा पैसा कहाँ से आता है? परंतु बाबा ने सदा इन सबका सामना किया किन्तु साधन की उच्चता के उसूल को नहीं छोड़ा। वे चाहते तो सबसे दान स्वीकार कर सकते थे और धर्म-प्रेमी

लोगों से चन्दा भी इकट्ठा किया जा सकता था परन्तु बाबा ने सदा इसके लिए मना ही किया। बाबा कहते कि ईश्वरीय कुल की सन्तान होकर चन्दा माँगना योग्य नहीं। दूसरे की सेवा कर उन्हें पवित्र बनाये बिना उनसे आर्थिक सेवा लेना ज्ञानोचित नहीं। अत: आप केवल उन्हीं से आर्थिक सहयोग लो जो कि ज्ञान के नियमों के अनुकूल अपने जीवन को ढालते हैं।

इसी प्रकार, बाबा किसी भी कार्य को करने के लिए कोई निकृष्ट आचरण अपनाने या हिंसात्मक रीति अथवा अशुद्ध वचनों का सहारा लेने का निषेध करते। बाबा कहते, ''जैसे आपका लक्ष्य उच्च है और ज्ञान उच्च है, वैसे ही आपको साधन भी सदा उच्च ही अपनाना चाहिए। बाबा कहते कि वीणा की मधुर तान सुनकर साँप भी वशीभूत हो जाता है तो ईश्वरीय ज्ञान के मधुर आलाप से क्या लोक-कल्याणार्थ काम भी नहीं करा सकते? बच्चे, यदि आप योग-युक्त अवस्था में टिककर आत्मिक दृष्टि देते हुए, पवित्रता के नियमों में रहते हुए इस सर्वोच्च ईश्वरीय ज्ञान को कहीं भी मधुरतापूर्वक कहेंगे तो आपकी वाणी में वह जौहर होगा तथा आपकी अव्यक्त शक्ति ऐसा कार्य करेगी तथा शिव बाबा की आपको ऐसी मदद मिलेगी

कि यदि वह कार्य होने में कल्याण होगा तो वह हो ही जायेगा.....परन्तु आप निकृष्ट साधन कभी न अपनाओ।''

सादगी और बचत

बाबा का अपना जीवन अत्यन्त सादा और मन अत्यन्त सरल था। उनका अपना कमरा, लिबास, खान-पान कम खर्चीला तथा बहुत सादा था, वे सफेदपोश और अल्पाहारी जो थे। अत: उन्होंने अपने प्रैक्टिकल जीवन से हजारों लोगों को प्रेरित किया। उन द्वारा नियत किया गया यूनिफार्म – ये सफेद वस्त्र – स्वच्छता और सादगी का प्रतीक है। रंगीन लिबास में तो बहुत विविधता होती है, वे तो अनेक प्रकार के और मूल्यवान तथा खर्चीले भी हो सकते हैं। अत: श्वेत वस्त्र यूनिफार्म के रूप में पसन्द करके बाबा ने इस निर्धन भारत के हजारों-लाखों नर-नारियों को सादगी तथा स्वच्छता का पाठ पढ़ाया। ज्ञान रूपी आभूषणों से आत्मा को सजाने की शिक्षा देकर उन्होंने हजारों जनों को स्वेच्छा से फैशन को तिलांजलि देने के लिए प्रेरित किया। न केवल बहुत लोगों ने जेवरों तथा फैशन को छोड़ दिया बल्कि कइयों ने घड़ी लगाना भी इस विचार से छोड़ दिया कि आज तो स्थान-स्थान पर घड़ियाँ लगी हुई हैं, तब घड़ी पर भी खर्च करने से क्या लाभ, इसे शृंगार अथवा दिखावे के लिए पहनने का क्या अर्थ?

बाबा ने ऐसा उच्च बनाया कि स्वत: ही हजारों नर-नारियों ने सिनेमा जाना, होटलों में खाना, व्यर्थ के रस्म-रिवाजों पर रुपये गँवाना भी छोड़ दिया। इस प्रकार कर्मेन्द्रियों पर कन्ट्रोल होने से तथा सादगी से, न केवल उनकी आत्मिक उन्नति हुई बल्कि आर्थिक बचत भी हुई। जो लोग आर्थिक रूप से पहले सदा तंग रहते थे, अब उनके जीवन में कुछ सहूलियत हुई तथा वे अपने धन को व्यर्थ ही गँवाने की बजाय लोक-कल्याणार्थ प्रयोग करके अपनी खुशी में वृद्धि करने लगे। बाबा केवल धन की बचत ही नहीं बल्कि संकल्पों की बचत भी सिखाते तथा व्यर्थ वचनों द्वारा भी शक्ति गँवाने से बचने का आदेश देते।

सदा स्नेही और सदा सहयोगी

बाबा सबको इतना तो स्नेह और सहयोग देते कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। बाबा कहते, ''बच्चे, जैसे किसी का कोई खानदानी हकीम (Family Doctor) होता है तो परिवार में किसी भी सदस्य को कोई तकलीफ होने पर वे नि:संकोच उसका दरवाजा खटखटाते हैं, इसी प्रकार, मैं भी आपका रूहानी फैमिली डॉक्टर हूँ। आपको कोई आत्मिक रोग हो, कोई भी समस्या हो, आप मेरे पास आ सकते हैं।'' इस प्रकार, बाबा सभी से दिल का हाल पूछकर उन्हें हर प्रकार की राहत देते। वे प्रतिदिन क्लास में पूछते, ''बच्चे, स्थूल या सूक्ष्म कोई भी सेवा हो तो लज्जा न करना। अपने इस पिता को बता देना....।'' वे प्रैक्टिकल रीति से सभी को इतना तो स्नेह, मार्ग-प्रदर्शन तथा हल (Salvation) देते कि सभी यह अनुभव करते कि यही हमारा सच्चा बाप एवं मित्र है।

एक बार की बात है कि किसी ग्राम से कुछ व्यक्तियों का ग्रुप आबू में बाबा के यहाँ आकर ठहरा हुआ था। अचानक एक रात्रि को वर्षा हुई और सर्दी भी अधिक पड़ने लगी। वे सभी लोग एक टैन्ट में सोये हुए थे। नींद में ही बाबा को उठने का संकल्प आया। बाबा उठे और तुरन्त उस टैन्ट में चले गये। यह देखकर वे सभी आश्चर्यचकित हुए कि इस समय सर्दी में वृद्ध शरीरधारी बाबा क्यों आये हैं! बाबा बोले, ''बच्चे, सभी चलो, बाबा के कमरे में चलकर सोओ! भले ही जगह थोड़ी है परन्तु रात्रि निकल जायेगी।'' बाबा सभी को कमरे में ले आये। सभी ने मन में सोचा कि देखो बाबा सबका कितना ध्यान रखते हैं!

अनेकों के जीवन में न जाने कितने संकट आए होंगे परन्तु लौकिक तथा अलौकिक विघ्नों को मिटाने के लिए, वे बाबा से ही दिल खोलकर राय लेते। उनका स्नेह बाबा से इतना जुट जाता कि आबू से विदा लेते समय उनकी आँखें तर हो जातीं।

– ब्र.कु. आत्मप्रकाश

बाबा ने लिखा, तुम ही चक्रधारी हो

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, शक्तिनगर, दिल्ली

बचपन से ही प्रभु-प्राप्ति की बहुत इच्छा रहती थी जिसे पूर्ण करने के लिए अल्प आयु में ही भक्ति करना प्रारम्भ किया था। आग्रह करने पर लौकिक माताजी ने गुरु भी धारण करा दिया जिन्होंने मुझे मन्त्र, ठाकुर और माला प्रदान की। इनका जाप और सेवा विधिवत् करती थी। कुछ बड़े होने पर माँ ने एक महात्मा जी नियुक्त किये जो गीता के श्लोक याद कराने आते थे। गर्मी के दिनों में आधी रात को उठकर मैं अपने ठाकुरों को स्नान कराती थी तथा सर्दी के दिनों में रजाई ओढ़ाती थी। हर रोज दोनों वक्त भोग लगाती थी। इस प्रकार लगनपूर्वक भक्ति करते-करते प्रभु मिलन की तमन्ना दिनोंदिन बढ़ती चली गई।

माँ की भक्ति हुई कम

माँ के साथ मन्दिरों और तीर्थस्थानों पर दर्शन करने भी जाया करती थी। कुछ समय के पश्चात् मैंने देखा कि माँ भक्ति कम करने लगी है। घर के मन्दिर के ठाकुर को नहलाना, चन्दन का तिलक लगाना, भोग लगाना आदि सब कार्य मेरे पर बढ़ते जा रहे हैं। माँ को मैं बार-बार पूछती थी, ''आपने भक्ति करना कम क्यों किया है?'' एक दिन उन्होंने कहा, ''जिस प्रभु को मिलने के लिए मैं भक्ति कर रही थी वे स्वयं मुझे मिल गये हैं, आपकी भक्ति अभी बाकी रही हुई है इसलिए आप भक्ति करो, मैं तो ज्ञान सुनती हूँ।'' आगे उन्होंने बताया कि मैं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में हूँ जहाँ स्वयं ईश्वर ज्ञान सुना रहे हैं। मुझे यह बात ठीक अपील करने वाली नहीं लगी। मैं श्रीकृष्ण को श्री चक्रधर के नाम से पूजती थी। केवल उन्हें ही अपना भगवान मान अन्य किसी को भगवान मानने को तैयार नहीं थी और ना ही किसी अन्य देवी-देवता के मन्दिर में कभी जाती थी। सिवाय श्रीकृष्ण के मेरे लिए और कोई भगवान हो नहीं सकता था।

बाबा को लिखा पत्र

माँ की यह बात कई बार मेरे कानों में गूँजती कि भगवान तो आ चुके हैं और मैं उनसे ज्ञान सुन रही हूँ। मन कहता, भगवान अगर आयें और मुझे ना मिलें, ऐसा कैसे हो सकता है! एक बार पूजा करते-करते विचार आया कि कहीं भगवान सचमुच आये हों और चले न जायें, मैं तो उनके मिलन की प्यासी हूँ और मिले बिना ही रह जाऊँगी। मुझे घर में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के चित्रों पर लिखा माउन्ट आबू का पता मिला। बिना किसी को बताये मैंने बाबा को पत्र लिखा जिसमें अपना तथा माँ का पूरा परिचय लिखा। उस समय सब माँ को 'यज्ञ माता' कहकर पुकारते थे अत: बाबा उन्हें अच्छी रीति पहचानते थे। पत्र प्राप्त होने पर बाबा ने मुझे मेरे लौकिक घर के पते पर ही उत्तर दिया। मैंने पत्र में लिखा था, ''मैं सच्चे दिल से भक्ति करती हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भगवान आयें और मुझसे मिले बिना चले जायें, ऐसा हो नहीं सकता परन्तु मैं आपके आने पर विश्वास तब ही करूँगी जब आप मुझे लिखोगे कि मैं आ चुका हूँ।'' मैंने चार-पाँच पन्नों का बड़ा लम्बा प्यार भरा पत्र लिखा था जिसमें अपने इष्ट श्री चक्रधर का परिचय भी दिया था। बाबा ने पत्र प्राप्त करते ही मुझे लिखा, ''बच्ची का पत्र पाया, बापदादा हर्षाया। बच्ची, तुम अपने प्रीतम का फोटो तो भेजो, बाबा आया है तुम्हें चक्रवर्ती बनाने। तुम ही चक्रधारी हो।'' श्री चक्रधर की फोटो ढूंढ़ने में मुझे लगभग एक महीना लग गया क्योंकि उस संस्थान में श्री चक्रधर की फोटो बनाना निषेध था।

अच्छा लगेगा तो मानूँगी

पत्र का समाचार माताजी को मिलते ही उन्होंने सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन को सब कुछ बताया और उनके

आग्रह से माँ ने मुझे सेवाकेन्द्र चलकर पत्र सुनाने का निमंत्रण दिया। जाते ही मुझे क्लास रूम में गद्दी पर बिठाया गया, फिर मैंने पत्र पढ़कर सुनाया। निमित्त बहन ने मेरा निर्णय पूछा तो मैंने उत्तर दिया, ''मुझे ज्ञान सुनने सेवाकेन्द्र में आने में कोई आपत्ति नहीं, ज्ञान अच्छा लगा तो मानूँगी।'' क्योंकि एक तरफ पत्र में लिखा था कि बाप तो आया है और दूसरी तरफ मेरा भक्ति में पूरा विश्वास था। मन के इस द्वन्द्व के कारण मैंने ऐसा उत्तर दिया। उन दिनों कश्मीरी गेट एक छोटी-सी पाठशाला थी, वहाँ की बहनों ने मुझे राय दी कि आप कमलानगर सेवाकेन्द्र पर जाकर कोर्स करो। उस समय गुलजार दादी, भ्राता जगदीश जी और बहन सुदेश जी (जो वर्तमान समय जर्मनी में हैं) वहाँ रहते थे। चूँकि यह सेवाकेन्द्र मेरे कॉलेज के रास्ते में पड़ता था, वहाँ जाना मेरे लिए सहज भी था इसलिए मैंने कमलानगर सेवाकेन्द्र पर कोर्स लेना आरंभ किया।

मम्मा ने प्रथम बार चक्रधारी कहकर पुकारा

अभी कोर्स करते दो ही दिन हुए थे, तीसरे दिन लगा कि सुबह-सुबह तैयार होकर माँ कहीं जा रही हैं। पूछने पर उन्होंने बताया कि हमारी मातेश्वरी आई हैं, उनसे मिलने जा रही हूँ। मैं भी उनके साथ मातेश्वरी से मिलने चल पड़ी। माँ पहुँचते ही सीधे मम्मा के कमरे में चली गई। उनसे पूर्व दो-तीन बहनें वहाँ उपस्थित थीं। सभी मम्मा से गले लगकर मिल रही थीं। जब मेरा नम्बर आया तो मैंने समझा कि शायद यहाँ मिलने की यही रसम है इसलिए मिलने के लिए कदम आगे बढ़ाया। मम्मा ने दोनों कन्धों से मुझे पकड़ कर बड़े प्यार से निहारते हुए कहा, ''अच्छा हमारी चक्रधारी भी आई है (मेरा पत्र बाबा ने आबू में क्लास में पढ़कर सबको सुनाया था, पत्र में माँ का परिचय लिखा था अत: मम्मा मुझे उनके साथ देखकर पहचान गई)।'' क्लास पूरा होते ही मेरे बाहर निकलने पर जो मिले, मुझे चक्रधारी कहकर ही सम्बोधित करे। जो मातायें मम्मा के साथ खड़ी थी, वे समझने लगी थी कि मेरा नाम ही चक्रधारी है। मम्मा ने प्रथम बार चक्रधारी कहकर पुकारा और मेरा अलौकिक नाम चक्रधारी ही हो गया। उस घड़ी से बाबा ने सदा के लिए मुझे अपना बना लिया।

रूबरू होने से पहले ही मम्मा से प्यार

मेरी एक सखी कमलानगर सेवाकेन्द्र पर जाया करती थी। एक दिन उसने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा। तब मुझे ज्ञान की पहचान नहीं थी, फिर भी उसके साथ घूमने के बहाने चली गई। तब वहाँ मम्मा आने वाली थी और जगदीश भ्राता जी ने मुझसे मम्मा के कमरे को सजाने के लिए पूछा। मैंने सोचा, आई हूँ, तो कुछ करना चाहिए, ऐसा मानकर हाँ कर दी और कमरा बहुत अच्छे से सजा दिया। अब मुझे इस बात का नाज है कि मम्मा से मेरा प्यार उनसे रूबरू होने से पहले से ही था और यज्ञ में मेरे भाग्य का खाता सेवा से खुला। जगदीश भ्राता जी ने मुझे त्रिमूर्ति पत्रिका (ज्ञानामृत से पहले त्रिमूर्ति नाम से पत्रिका निकली थी) में छपने वाले लेखों की फाइनल कॉपी लिखकर लाने की सेवा सौंपी। मुझे अच्छा लगा और मैं यह सेवा करती गई। भ्राता जी किसी भी बहन को आगे बढ़ाने के लिए बहुत युक्ति से ऐसे सेवा लेते थे। धीरे-धीरे ये सेवायें बढ़ती गईं और कॉलेज की पढ़ाई भी देखते-देखते पूरी हो गई।

बाबा के प्रबन्ध से कुछ दिन सिलाई सीखी

पिताजी का आदेश था कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊँ लेकिन मुझे ब्रह्माकुमारी जीवन बहुत अच्छा लगने लगा था। मुझे पक्का निश्चय हो गया था कि यही सत्य ज्ञान है और मुझे ब्रह्माकुमारी ही बनना है। पिताजी ज्ञान को इतना नहीं मानते थे पर उनको मम्मा-बाबा के लिए बहुत आदर था, खास मम्मा के लिए। उनका कहना था कि बेटी की शादी कर दी जाये फिर वो जो चाहे सो करे। मैं नौकरी या शादी करने के लिए कतई तैयार नहीं थी, मुझे तो सिर्फ और सिर्फ ब्रह्माकुमारी ही बनना था। मैंने अपना निर्णय माँ को बता दिया था। इस दौरान बाबा ने हम बन्धन वाली कन्याओं के लिए सिलाई क्लास खोल दी थी। करोलबाग में एक माता का बहुत बड़ा घर था, वहाँ बाबा के कहने से सिलाई की ट्रेनिंग क्लास सुबह 9 बजे से शाम के 5 बजे

तक चलने लगी। कुछ दिनों तक मैं वहाँ जाती रही परन्तु मन नहीं लगा।

बाबा के साथ मुम्बई में सेवा

एक दिन मम्मा राजौरी गार्डन आई, तो मैंने उन्हें अपनी इच्छा यज्ञ में समर्पित होने की बताई। मैंने यह भी बताया कि पिताजी इसके लिए अनुमति नहीं दे रहे हैं। मम्मा ने कहा, ''मैं आपके पिताजी से बात करूँगी तथा उनके विचार भी लूँगी।'' थोड़े दिनों बाद बाबा का फोन राजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र पर बड़ी दीदी के पास आया और सिलाई क्लास चलाने वाली हम कन्याओं को बाबा से फोन पर बात करने के लिए कहा गया। मैंने बाबा से फोन पर बात की तो बाबा, हम तीन कन्याओं को बड़ी दीदी के साथ मुम्बई बुला रहे थे। हमने तैयारी शुरू कर दी। मेरे पिताजी ने साफ मना करते हुए कह दिया, ''अपने बाबा से कहो कि अच्छे खानदान की बेटियाँ ऐसे घूमने-फिरने मुम्बई जैसी जगह अकेली नहीं जाया करतीं।'' हमारे मन में यही बात थी कि भगवान ने बुलाया है, हमें जाना चाहिये, भगवान का निमंत्रण हो और मैं न जाऊँ, यह कैसे हो सकता है। टिकट भी बुक थी। अभी थोड़ा ही वक्त बचा था, मुझे बड़ा उमंग आ गया। मैंने पिताजी को फोन करके पूछा, ''मैं अकेली नहीं जा रही हूँ, सब जा रहे हैं, मैं जाऊँ?'' पिताजी ने कहा, ''जब जाना ही है तो फोन करके पूछती क्यों हो?'' ऐसा थोड़ा हल्का जवाब पाकर सामान के साथ मैं रेलवे स्टेशन के लिए निकली। मैं जैसे ही चढ़ी, ट्रेन चल पड़ी। ऐसे लगा मानो मेरे लिए ही ट्रेन रुकी थी। फिर तो पिताजी ने हमारे पहुँचने की खबर जानने के लिए टेलिग्राम किया, पत्र तथा पैसे भी भेजे। बाबा के साथ एक महीना मुम्बई में रही। बाबा रोज कहीं न कहीं सेवा पर भेजकर, सेवा करना सिखाते थे तथा अपने साथ प्रात: सैर पर भी ले जाते थे।

साक्षात्कार से अल्पकाल की आश पूर्ण

एक दिन बाबा के कहने पर हम जसलोक अस्पताल के मालिक लोकूमल जी को भगवान का सन्देश देने गये। बाबा ने जैसा सिखाया था, वैसे हमने 'भगवान का अवतरण', 'नयी सतयुगी दुनिया की स्थापना' इत्यादि बातें बताईं। उन्होंने खूब ध्यान से बातें सुनीं, फिर कहा, ''आप बाबा को कहना कि एक बार मुझे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार कराएँ तो मैं घुटनों के बल चलकर भी बाबा से मिलने आऊँगा।'' हमने वापिस जाकर यह बात बाबा को बतायी। बाबा ने कहा, ''साक्षात्कार कराना तो शिवबाबा के हाथ में है, मेरे हाथ में नहीं।'' मेरे मन में आया, शिवबाबा इनको साक्षात्कार करा दे तो कितना अच्छा हो! तभी एक और बात भी हुई। जहाँ बाबा के साथ हम प्रात: सैर पर जाते थे वहाँ एक व्यक्ति रोज सूर्य को जल चढ़ाता था। हम उसे रोज देखते थे। मेरे मन में रहम आता था कि इधर ज्ञान-सूर्य (बाबा) है और यह जड़ सूर्य को जल चढ़ा रहा है, तो इसे ज्ञान मिलना चाहिए। तब एक दिन बाबा से उसको ज्ञानसूर्य अर्थात् शिवबाबा का परिचय देने के लिए पूछा। बाबा ने कहा, ''रहने दो।'' बाबा के ऐसे कहने के बाद भी ज्ञान देने का विचार मेरे मन में चलता रहा। दो दिन बाद वो व्यक्ति अपनी जल की लोटी वहीं रखकर तेज कदमों से बाबा की ओर आया और बाबा के चरणों पर गिर गया। बाबा ने बड़े प्यार से उसे उठाया, गले लगाया, उसकी आँखों से अश्रुधार बह रही थी। बाबा ने अपना रूमाल निकालकर उसके अश्रु पोंछे तब उसने बाबा को देखा और वो चला गया। फिर बाबा ने एक भाई को उसके पास भेजा कि पूछो, बच्चा बाबा के चरणों पर

क्यों गिरा और उसके अश्रु क्यों बहे? बाबा जानते थे कि हम बच्चों के मन में प्रश्न अवश्य उठ रहे होंगे। उसने बताया कि मुझे मेरे विष्णु भगवान के दर्शन हुए थे। भाई ने उससे कहा कि जिनसे आपको यह दर्शन हुए वे अमुक स्थान पर ज्ञान सुनाते हैं, वहाँ आइये और ज्ञान सुनिए। तो उसने कहा, ''मुझे तो मेरे देव का साक्षात्कार हो गया, बस, मेरी तृप्ति हो गई।'' मुझे तब समझ में आ गया कि साक्षात्कार हो जाने मात्र से लोग ज्ञान में नहीं चल पड़ते। दरअसल साक्षात्कार से अल्पकाल के लिए आश पूरी हो जाती है।

बाबा ने ली परीक्षा

मुम्बई में एक दिन मुरली चलाते हुए शिवबाबा ने कहा, ''आज बाबा सबसे निश्चय-पत्र लिखवाएंगे, सबको सफेद पेपर दे दो, किसी को किसी का देखना नहीं है। जिनका निश्चय-पत्र ब्रह्माबाबा के निश्चय-पत्र से मिलता होगा उनको इनाम दिये जायेंगे।'' करीबन 400 ब्रह्माकुमार भाई-बहनें थे। पेपर देने के लिए सब पूरे हॉल में फैल कर बैठ गये। पूरी क्लास में सिर्फ एक बहन का निश्चय-पत्र थोड़ा बहुत बाबा के पत्र से मिल रहा था। उसे इनाम मिला। बाबा ने आत्मा में, आत्मा के पिता में, ब्रह्मा बाबा में, प्राप्ति में, ड्रामा में, ड्रामा में चल रहे समय पर, अपने जीवन पर – सार रूप में सारे ज्ञान पर निश्चय को समाता हुआ निश्चय-पत्र लिखा था जिसमें कहीं भी ना अल्प विराम था, ना पूर्ण विराम था। सम्पूर्ण ज्ञान के प्रत्येक प्वाइंट पर निश्चय, इसी को निश्चय कहा जाता है, यह ब्रह्मा बाबा के निश्चय-पत्र से स्पष्ट हुआ।

सीखने का इससे बड़ा मौका कहाँ मिलेगा ?

मम्मा जब पुन: दिल्ली आई तब मैंने उन्हें समर्पण की बात पिताजी से करने के लिए कहा। मम्मा से मिलने जब पिताजी आये, मम्मा ने पूछा, ''इनके (मेरे) लिए आपने क्या सोचा है?'' पिताजी ने बड़े इत्मीनान से बात करते हुए मम्मा से कहा, ''मम्मा, मुझे नहीं लगता कि मेरी बेटी सेवाकेन्द्र पर रह सकेगी।'' मम्मा के कारण पूछने पर उन्होंने बताया, ''यह बड़े नाजुक तरीके से पली है। इसने कभी कुछ काम तो किया ही नहीं है। एक कपड़ा तक नहीं धोया है। अगर रोटी बेलती है तो इतना धीरे से कि कहीं रोटी को दर्द न हो जाये। ऐसे में यह सेवाकेन्द्र पर कैसे रह सकती है?'' मम्मा ने पूरी बात बड़े ध्यान से सुनी। फिर कहा, ''अच्छा, ठीक है। चार सप्ताह के लिए आप पहले भेजो। यह भी सेवाकेन्द्र पर रहकर देख ले, आप भी देख लें, हम भी देख लें।'' पिताजी चुप हो गये, कुछ बोले नहीं। मैं उनके साथ घर चली गई। दो-चार दिन तक कुछ बात ही नहीं हुई इसलिए एक दिन धीरे से मैंने पिताजी से पूछा कि आपने मम्मा के सामने मुझे चार सप्ताह के लिए सेवाकेन्द्र पर रहने के लिए कहा था। पिताजी ने कहा, ''मैंने कहाँ कुछ कहा था, मैं तो चुप रहा था। बड़ों के आगे थोड़े ही बोला जाता है।'' मैंने कहा, ''बड़ों के आगे चुप रहने का मतलब भी सकारात्मक माना जाता है।'' फिर भी वे कुछ नहीं बोले। अगली सुबह मैं कमला नगर में दादी गुलजार को एक गिफ्ट देने गई तब दादी मेरे गले में हाथ डालकर बड़े प्यार से अपने कमरे में ले गई और पूछा, ''मेरे साथ जो बहन रहती थी वो सेवा के लिए दूसरे सेवाकेन्द्र पर गई है, क्या तुम मेरे साथ रहोगी?'' मैंने तुरन्त हाँ कह दिया, सोचा कि जगदीश भाई भी हैं, दादी गुलजार भी हैं, इससे सुन्दर स्थान और सुअवसर और कहाँ मिलेगा? दादी जी ने पूछा, ''कब आओगी?'' मैंने दूसरे दिन ही आने के लिए कह दिया।

घर पहुँचकर बैग में जरूरी कपड़े रखकर तैयारी कर ली और माँ को कहकर सेवाकेन्द्र पर आ गई। लौकिक पिताजी अगले दिन सेवाकेन्द्र पर आये और कहा, ''घर चलो।'' मैंने कहा, ''अभी आपके कहने पर मैं घर चल पड़ती हूँ पर आप भी, जब मैं कहूँ, मुझे वापिस आने देना।'' दूसरे दिन मैंने सेवाकेन्द्र पर आने को कहा तो पिताजी ने कहा, ''जाने के लिए थोड़े ही वापिस ले आया था।'' मैंने कहा, ''आपके कहने पर मैं आपके साथ आ गई, मेरे कहने से अब आप मुझे जाने दीजिए नहीं तो फिर मैं भी आपके कहने से वापिस नहीं आऊँगी।'' फिर मैं सेवाकेन्द्र पर आ गई क्योंकि मुझे जीवन का फैसला करना था और

तब से बाबा के घर में ही हूँ। इन चार सप्ताह ने मुझे नया जीवन प्रदान किया जो चल ही रहे हैं।

फरियाद का मौका आया नहीं

एक बार मुझे लौकिक पिता जी ने कहा, ''अभी तू छोटी है, जो भी फैसले लिए जाते हैं, सोचकर लिए जाते हैं, कल को तू बीमार हो गई, कुछ अनबन हुई तो तेरे को कौन देखेगा? ये बहनें सब सिन्धी हैं, इनका कल्चर अलग है, हम पंजाब वालों का कल्चर कुछ अलग है, एडजस्ट हो सके, ना हो सके, फिर तुझे कौन संभालेगा?'' मैंने तब सोचा कि मेरे पिता जी ने अपनी एक बेटी की शादी करके उसका हाथ, दो हाथ वाले मनुष्य को सौंपा है, उसका इनको इतना भरोसा है और मैं हजारों हाथों वाले भगवान को हाथ सौंप रही हूँ, उन पर इनको भरोसा क्यों नहीं है? इनका हजार हाथों वाले में विश्वास बिठाना मेरी जिम्मेवारी है अत: इनके आगे फरियाद का मौका कभी आने नहीं देना है, ऐसी गाँठ मैंने मन में बांध ली। जब इनको मनुष्य पर इतना विश्वास है तो मुझे मेरे बाबा पर भी तो दृढ़ विश्वास है, वो मुझे कभी कष्ट नहीं आने देंगे। बाबा जहाँ रखें, जैसे रखें, जो खिलाएँ, जो पहनायें, मुझे वही और वैसा ही करना है। अगर प्रभु जमीन पर सुलायेंगे तो वहाँ सोऊँगी, जो कुछ भी होगा, बाबा की देन समझकर सर-माथे पर चढ़ाऊँगी, यह मन में पक्का कर लिया। सचमुच कभी फरियाद का मौका आया ही नहीं।

इस ईश्वरीय जीवन में भारत के बहुत-से स्थानों पर सेवा करने का सुअवसर मिला। बाद में यू.एस.आर.(संयुक्त सोवियत गणराज्य) जाना हुआ। आज वहाँ लगभग 55 सेवाकेन्द्रों, उपसेवाकेन्द्रों में सेवायें चल रही हैं। वहाँ हमारी दो बहनें नियमित सेवाएँ दे रही हैं। मैं वर्ष में एक या दो बार सेवार्थ जाती हूँ। इंग्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, रशिया तथा बहुत से अन्य देशों के सेवाकेन्द्रों पर ईश्वरीय सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं अपने जीवन को धन्य समझती हूँ कि जिस प्रभु की मुझे तलाश थी उस प्रभु ने मुझे अपना बनाकर अनेकों को उस प्रभु का बनाने की सेवा का अवसर दिया। धन्यवाद है मेरे प्रभु का और धन्य है मेरा भाग्य।

सभी को एक ही शुभ सन्देश देना चाहती हूँ कि मानव जन्म को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इसे सर्वश्रेष्ठ बनाये रखने के लिये स्वयं के सत्य स्वरूप को पहचान, सत्य पिता परमात्मा से सर्व सम्बन्ध जोड़, सर्व सत्य प्राप्तियों को प्राप्त कर सदा सुखद और शान्त जीवन जीयें। सन्मार्ग की राह पर चलने और सबको चलाने का प्रयत्न करें। ❖

संजय की कलम से...

पृष्ठ 4 का शेष..

को बड़ी आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक उठा देने का दिव्य कार्य करता था। उनका भौतिक रूप, उनके नेत्र, उनके हाथ और उनकी मुसकान का लोगों पर चमत्कारी प्रभाव होता था। उनकी भौंहों के बीच स्थित तेजोमय आत्मा, दूसरी आत्माओं को माया से लड़ने की प्रेरणा देती थी। उनकी दिव्य दृष्टि लोगों को आध्यात्मिकता के पथ पर आगे बढ़ने का मौन, सूक्ष्म संदेश देती थी। उनके संपर्क में आने से दिव्य गुणों का पुनर्जागरण होता था। उनकी उपस्थिति परमानंददायक थी। उनकी वाणी हृदय-तंत्रों को झंकृत कर देती थी। उनकी आध्यात्मिक शक्तियों ने अनेक लोगों को सुखी बना दिया, अनेक लोगों को सुधार दिया और अनेक लोगों ने स्वयं को बाबा की सेवा में समर्पित कर दिया। उनके गहन चिंतन तथा उनकी शांतिपूर्ण तरंगों ने मधुबन के कण-कण को शांतिप्रद बना दिया। उनकी मानव-सेवा अद्वितीय थी। उनका नारा ''सेवा, सेवा और सेवा'' अद्वितीय था। कोई भी बात उन्हें लोगों की भलाई करने से नहीं रोक सकती थी। विश्राम, आरोग्य लाभ तथा निवृत्ति के विचारों ने उन्हें विचलित नहीं किया। सेवा करने में वे इतने उत्साही, प्रेमपूर्ण तथा संवेदनामय थे जितने कि वे भी नहीं थे जिनका कल्याण वे किया करते थे! ❖

यह दिल हर पल गाता रहता एहसान तुम्हारा ओ बाबा

दादी कमलमणि
कृष्णा नगर, दिल्ली

प्यार के सागर परमपिता परमात्मा शिव की अनेक लीलाएं साकार ब्रह्मा बाबा द्वारा देखने तथा अनुभव करने का परम-सौभाग्य दादी कमलमणि जी को प्राप्त है। आपने वरदाता से अनेक वरदानों को प्राप्त करके स्वयं को भरपूर किया है। आपके व्यक्तित्व में अवर्णनीय मधुरता और व्यवहार में कमल जैसा न्यारा और प्यारापन है। आपने देश-विदेश की हज़ारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन कराकर उनके जीवन को दिव्य बनाया है। वर्तमान समय आप दिल्ली में ईश्वरीय सेवाओं की ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए सेवारत हैं। दादी जी के दिव्य अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं... सम्पादक

मेरा लौकिक जन्म सन् 1929 में सिन्ध के मेलवानी कुल में एक धार्मिक तथा सम्पन्न परिवार में हुआ। माता-पिता धार्मिक वृत्ति के होने के कारण धर्म की बातों में आस्था रखते थे जिस कारण मुझे भी बचपन से ही भगवान से मिलने की लगन थी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बाल्यकाल से ही सत्संगों तथा मन्दिरों में जाने में रुचि लेती थी।

हैदराबाद-सिन्ध में सन् 1936 में दादा लेखराज के घर 'ओम् मण्डली' का सत्संग शुरू हुआ। सत्संग में जो भी जाता था, उसको साक्षात्कार होता था जिससे सत्संग में जाने वालों की संख्या बढ़ती गई। कुछ दिनों के बाद बाबा को विचार आया कि छोटे बच्चों को बचपन से ही ज्ञान-लोरी दी जाये और उनके लिए सच्चे गुरुकुल की तरह वातावरण हो तो उनका बहुत ही कल्याण हो सकता है। बाबा ने बालकों और बालिकाओं की शिक्षा के लिए ओम् निवास में व्यवस्था की। लौकिक पिताजी को यह बात पता चलते ही उन्होंने पूछा, ''बच्ची, क्या तुम सत्संग में जाना चाहती हो?'' मैंने बड़ी खुशी से कहा, ''हाँ, मुझे ज़रूर जाना है।'' माता-पिता ने लौकिक चाचा को कहा, ''जाओ, बच्ची को ओम् निवास में बाबा के पास ज्ञानामृत पीने ले जाओ।'' इस प्रकार मुझे बोर्डिंग में रहने का सुन्दर अवसर मिल गया।

बाबा की पालना अद्वितीय थी

तब मेरी उम्र आठ वर्ष की थी। बोर्डिंग में हम छोटे बच्चों और बच्चियों को शिक्षा देने के लिए ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी, चन्द्रमणि जी तथा शान्तामणि जी थीं। सभी बच्चों की एक जैसी पोशाक, एक-जैसे बिस्तरे आदि-आदि बनाये गये। राजकुमारियों की तरह बाबा हमारी पालना करते थे जिससे हमें लौकिक सम्बन्धी कभी याद नहीं आते थे। हमारी सारी दिनचर्या और शिक्षा ज्ञान-युक्त रीति से चलती थी। हमें नियमित राज-विद्या के साथ-साथ ईश्वरीय विद्या भी पढ़ाई जाती थी।

श्री कृष्ण का साक्षात्कार

प्रतिदिन पढ़ाई के बाद दोपहर लगभग एक बजे हम सभी बच्चों को शान्त समाधि में बिठाया जाता था। तब एक शिक्षिका 'ओम्' की धुन भी करती थी। हम बच्चे भी उनके साथ धीमे स्वर में ओम् की ध्वनि गाते थे। उस समय कई बच्चे ध्यानावस्था में चले जाते थे। मैं भी एक दिन ध्यान में चली गई और दिव्य दृष्टि द्वारा बहुत ही सुन्दर श्रीकृष्ण को देखा। उसके साथ दिव्य रास करते-करते अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने लगी। मेरे साथियों को भी वैकुण्ठ के अनेक ऐसे साक्षात्कार हुए। उनके अलौकिक अनुभव ऐसे थे कि सुनने वाले भी आश्चर्यचकित रह जाते थे। सचमुच, ऐसे अलौकिक दिव्य अनुभवों से सम्पन्न बचपन के दिन भुलाने से भी नहीं भूलते। मेरा लौकिक नाम किशनी था, साकार ब्रह्मा बाप मुझे बड़े ही प्यार से 'किशमिश' नाम से पुकारते थे और पारलौकिक अव्यक्त बापदादा ने मुझे 'कमलमणि' नाम दिया। तीनों नाम की राशी एक है और बाबा की गोद में आते ही कमलमणि नाम सार्थक हुआ क्योंकि लौकिक सम्बन्धियों से मोह की रग जल्दी ही टूट गई और कमल समान न्यारा और प्यारा रहने की बाबा ने मुझे विशेषता प्रदान की।

बाबा ने ली परीक्षा

मेरे साथ-साथ मेरी लौकिक पाँच बहनें भी यज्ञ में समर्पित हुईं। बाबा हमें प्यार से कहते थे – Six Lucky Sisters. लगभग 6 मास के बाद हमारे लौकिक पिताजी का देहान्त हुआ, बाबा ने कहा कि आप सभी बहनें लौकिक घर जाकर सभी से मिलकर आओ। हमने कहा, बाबा, हम नहीं जायेंगे। बाबा ने कहा, बाबा की आज्ञा है कि आप सभी लौकिक घर जाकर आओ, बाबा देखेंगे कि किस-किस को रोना आया। हम सभी बहनें घर जाकर लौकिक सम्बन्धियों से मिलीं, बुद्धि में आत्मा का और बेहद ड्रामा का ज्ञान स्पष्ट होने के कारण किसी को रोना नहीं आया। बाबा को समाचार सुनाया, तो बाबा ने कहा कि सचमुच आप 'मोहजीत' हो। इस तरह हमें बाबा शक्ति देकर आगे बढ़ाते रहे।

बाबा से अनवरत सकाश का अनुभव

चौदह वर्ष की योग-तपस्या की भट्ठी में बाबा हम बच्चों के लिए योगाभ्यास के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम बनाते थे। कभी-कभी हम सप्ताह भर तक या अधिक समय तक 'मौन' धारण करती थीं। उन दिनों केवल थोड़ा-सा फलाहार करती थीं। कभी-कभी तीन दिन एक ही कमरे में बैठकर योग करने का प्रोग्राम मिलता था। मुझे कई बार ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस साकार दुनिया से दूर, सूक्ष्म वतन में आकारी फरिश्ते रूप में अकेली बाबा के साथ बैठी हूँ। बाबा मुझे अनवरत सकाश दे रहे हैं। मैं अपना सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप अनुभव करती थी। बाबा हमें कहते थे, ''बच्ची, ऐसा समय भी आयेगा जब तुम्हारा संगठन बिखर कर सब अकेले-अकेले हो जायेंगे। तुम्हारे सामने विकारी आत्माएँ वार करने आयेंगी। अगर तुम योगयुक्त नहीं होंगे तो हार खा लेंगे।'' ऐसे महावाक्य सुनकर हम और भी ज्यादा लगन से ग्रुप-ग्रुप बनाकर योगाभ्यास करते थे। ऐसे दिव्य अनुभव स्वयं भगवान के साथ करते रहने से चौदह वर्ष कैसे बीत गए, हमें पता भी न चला।

मुझे ईश्वरीय ज्ञान का मनन-चिन्तन करने का शौक था। समय मिलने पर ईश्वरीय महावाक्यों का पठन-पाठन और मनन करती थी, दूसरों के साथ ज्ञान-चर्चा करती थी। इससे सदा व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ बोल द्वारा समय न गँवाकर स्वयं को सुरक्षित रखती थी और सदा आगे बढ़ती रही।

बाबा ने भेजा सेवा पर

एक दिन बाबा ने मुझे बुलाकर पूछा, 'बच्ची, कमलानगर, दिल्ली में सेवाकेन्द्र के लिए नया मकान मिला है, मनोहर बच्ची ने पत्र में लिखा है कि कमलमणि को भेजो, तो क्या आप सेवा पर जाओगी?' मैंने कहा, 'जी बाबा, मैं जरूर जाऊँगी।' विदाई देते समय बाबा ने कहा, 'बच्ची, तुम जहाँ भी जाओगी, तुम्हें सब सहज मिलेगा।' ये

वरदानी बोल सुनकर मेरा आत्मविश्वास और भी बढ़ा। बाबा ने मुझे 26 जनवरी के दिन चन्द्रहास भाई के साथ दिल्ली भेजा। वहाँ मैं मनोहर दादी के साथ आठ वर्ष तक विभिन्न प्रकार की सेवा करती रही। दीदी मनमोहिनी जी ने मुझे दिल्ली के आस-पास मेरठ, हापुड़, गुड़गाँव, सिकन्दराबाद इन छोटे-छोटे सेवाकेन्द्रों में सेवा के निमित्त बनाया। उसके बाद इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ में भी सेवार्थ गई। अभी पिछले 56 वर्षों से कृष्णानगर सेवाकेन्द्र पर ही सेवारत हूँ।

विदेश सेवा पर जाना हुआ

सन् 1988 में लन्दन में चार मास सेवार्थ जाना हुआ। अव्यक्त बापदादा से विदाई लेते समय बाबा ने कहा कि आपके पास बहुत खज़ाना है, उसे बाँटने अर्थ सेवा पर जा रही हो। लन्दन में बाबा की जीवन कहानी, स्वयं के जीवन के दिव्य अनुभव अनेक ब्रह्मावत्सों को सुनाने का अवसर मिला। उन्होंने जीवन में नया उमंग-उल्लास अनुभव किया। बापदादा हम बच्चों को निमित्त बनाकर अनेक आत्माओं की कैसे सेवा कराते हैं, ये मैंने अनुभव किया।

मैं सदा यह ध्यान देती हूँ कि मेरे द्वारा चाहे मन से, वाचा से, कर्म से किसी को दुख नहीं पहुँचे। मेरे से सभी खुश रहें तथा सुख पाकर ही जायें। मैं सदा शान्ति में रहना और औरों को भी शान्त रखना पसंद करती हूँ। इसलिए न कभी किसी से डिस्टर्ब होती हूँ, न किसी को डिस्टर्ब करती हूँ। सदा तपस्या में मग्न रहती हूँ। प्यारे बाबा की हम बच्चों के प्रति आश है कि हम 'सच्चे बेदाग हीरे' बनकर सारे विश्व में चारों ओर दिव्यता का प्रकाश फैलायें, वह आश पूरी करने की ही तात सदा रहती है। ऐसे श्रेष्ठ जीवन बनाने वाले बापदादा के एहसान को हम कैसे चुका सकते हैं। ❖

रोम-रोम में शान्ति भर गई

डॉ.बबीता वर्मा, डेन्टल सर्जन, चम्पावत (उत्तराखंड)

मुझे ईश्वरीय ज्ञान में आये चार वर्ष हो गये हैं, 22 अप्रैल, 2016 को मुझे मधुबन (ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय, माउंट आबू) जाने का सुनहरा अवसर मिला। जाने के समय मैं कमरदर्द से ग्रस्त थी परन्तु जैसे ही मधुबन की यात्रा शुरू की, दर्द कहाँ चला गया, कुछ पता नहीं चला। मधुबन की पावन धरनी पर कदम रखते ही ऐसा लगा जैसे नया जीवन मिल गया है। वहाँ के वातावरण ने रोम-रोम में सुख और शान्ति भर दी। सारा तनाव मानो बाबा ने खुद ब खुद ले लिया और नयी उमंग भर दी। बाबा के पूरे परिसर में इतनी सकारात्मक ऊर्जा है जिसकी अनुभूति हम प्रत्यक्ष रूप से कर सकते हैं। वहाँ योग लगाना नहीं पड़ता, पूरे दिन सहज ही हम योगयुक्त रहते हैं। योग की शक्ति का वहाँ व्यवहारिक परिणाम देखा। बाबा ने एकदम सत्य कहा है कि मधुबन जाकर भरकर आओ और फिर बादल बनकर बरसो। अब तो हर परिस्थिति एक खेल नजर आती है। व्यर्थ संकल्पों से एकदम किनारा हो गया है। मेरी दृष्टि क्या बदली मानो पूरी सृष्टि ही बदल गयी है।

अंत में यही कहूँगी –

भटकते थे दरबदर धूप के रेगिस्तान में,
अब तो ठंडी छाँव का पूरा आसमान मिल गया।
प्यासे थे सुख-शान्ति की एक बूँद पाने को,
अब तो सुख का सागर सर्वशक्तिवान मिल गया।
सब प्रश्न समाप्त हुए, सारे मनमुटाव मिट गये,
वो दाता, वरदाता महान मिल गया।
क्या, क्यों, कैसे के चक्कर से मुक्त हो गए,
दिव्य नेत्र खुल गये, वापस मेरा जहान मिल गया।

संन्यासी से बना ब्रह्माकुमार

ब्रह्माकुमार रामेश्वर, लालगंज-हाजीपुर (बिहार)

मुझे बचपन से परमात्मा पिता की तलाश थी। दादा जी भक्त थे, साधु-संन्यासियों की बहुत सेवा करते थे। हर रोज रात को शिव-पुराण या प्रेमसागर का एक अध्याय जरूर पढ़ते थे और हम उसे सुनते थे। पिताजी ने मुझे घर में ही पढ़ना-लिखना सिखाया। फिर मैं धार्मिक किताबें पढ़ने लगा। एक बार मैंने ध्रुव की कहानी पढ़ी कि वह छोटी आयु में ही भगवान को पाने में सफल हो गया। तो विचार चला कि उसने तो आठ साल की आयु में ही भगवान को पा लिया, मैं तो बारह साल का हो गया, अब कब भगवान से मिलूँगा। फिर रामायण के उत्तरकाण्ड में निराकार भगवान की महिमा पढ़ी – बिन पग चलै, सुनै बिन काना, बिन कर करै कर्म विध नाना।।

सामान लेकर भाग गया गुरु

इसे पढ़कर सवाल उठा कि वह बिना हाथ-पैर वाला कौन है, कहाँ मिलेगा, उसे ढूँढ़ना चाहिए। इन सब बातों से प्रेरित होकर 12 वर्ष की आयु में एक दिन भगवान की खोज में घर छोड़ दिया और बनारस में विश्वनाथ मन्दिर में भगवान विश्वनाथ के दर्शन किए। वहाँ से आगरा गया। आगरा में एक वृद्ध संन्यासी मिला। उसको मैंने गुरु बना लिया। उसने मुझे भिक्षा मांगने बाजार में भेज दिया और पीछे से मेरा सामान और थोड़ा जो पैसा था, लेकर भाग गया। मैंने किसी-किसी से उसके बारे में पूछताछ की तो मुझे बताया गया कि मथुरा चले जाओ, वहाँ बहुत साधु रहते हैं, वहीं मिल जाएगा।

नाम रख दिया कामेश्वर

मथुरा आने पर मुझे दूसरा वृद्ध, वैष्णव साधु मिला। वो कहता था, जिधर देखता हूँ विष्णु ही नजर आता है। मैंने उसको गुरु बना लिया। उसने मुझे गुरुमंत्र दिया, कुछ दिन मैं जपता रहा, फिर जब भगवान की प्राप्ति होती नजर नहीं आई तो वहाँ से आगे बढ़ा और कोसीकलां के नजदीक फारम गाँव से होता हुआ कामबन (बरसाने से आगे) के शिव मन्दिर में नागा बाबा रिजराज गिरि के पास पहुँचा । मैंने उससे अपना शिष्य बना लेने का नम्र निवेदन किया। उसने मुझे कहा, तुम अपने घर वापस जाओ। किराया देने को भी तैयार हो गया। मैंने कहा, मुझे भगवान को पाना ही है। मेरी दृढ़ता को देख उसने शिष्य बनाकर मन्त्र दे दिया और मेरा नाम कामेश्वर रख दिया। उस मंत्र से भी मुझे कोई फायदा नहीं हुआ।

सन्तुष्टिदायक उत्तर कहीं नहीं मिला

फिर उन गुरु से छुट्टी लेकर दिल्ली आ गया, वहाँ रामलीला मैदान में एक उदासी साधु हरिहर बाबा का आश्रम है। वहाँ अनेक साधु थे। उनसे भी पूछा, वह निराकार, बिना हाथ-पैर वाला कौन है? जब वे भी सन्तोषजनक जवाब नहीं दे पाए तो मैं हरिद्वार आ गया। इसके बाद बद्रीनाथ, केदारनाथ, जगन्नाथपुरी, मैसूर, मुम्बई, द्वारकाधाम होते हुए सारे भारत के दुर्गम तीर्थस्थलों के नामीगिरामी साधु-सन्तों से मिलता रहा, यह जानने के लिए कि भगवान कौन है, कहाँ पर है पर सन्तुष्टिदायक उत्तर कहीं नहीं मिला।

'सर्वोपरि संस्था' के बारे में पढ़कर मिली सन्तुष्टि

सारा भारत घूमकर सन् 1961 में वापस मथुरा में आ गया। वहाँ घाट पर एक साधु मिला जिसका नाम था कृष्णदेव। वह दिल्ली के ब्रह्माकुमारी आश्रम के सम्पर्क में रहा था। तीन पुस्तकें उसने लिखीं, एक कविताओं की, दूसरी अपनी जीवन-कहानी, तीसरी आश्रम जीवन के अनुभवों की पुस्तक लिख रहा था। उसके अक्षर बहुत सुन्दर थे, मुझे आकर्षण हुआ कि इतने सुन्दर अक्षर तो

मशीन भी नहीं छापती, इसलिए उसको पूछा, क्या मैं इस किताब को देख-पढ़ सकता हूँ? उसकी अनुमति पाकर मैं उन अनुभवों को पढ़ने लगा। उसमें उसने चित्रों सहित विस्तार से अनुभव लिखे थे कि जीवन में कब, कौन-सा साधु, कहाँ मिला, किस-किस संस्था में गया, क्या-क्या सीखा। सबसे अन्त में 'सर्वोपरि संस्था' शीर्षक के साथ ब्रह्माकुमारीज संस्था का वर्णन था। पुस्तक में निराकार शिव बाबा का चित्र, शिव बाबा के नाम, गुण, कर्त्तव्य आदि का सत्य परिचय, आत्मा, त्रिमूर्ति, 84 जन्म आदि का सुन्दर वर्णन था और ज्ञानयुक्त चित्र भी थे। इस संस्था के बारे में पढ़कर बहुत सन्तुष्टि हुई।

बाबा ने दी आबू आने की स्वीकृति

मुझे निराकार भगवान को पाने की इच्छा थी इसलिए उस साधु को कहा, मुझे भी दिल्ली में इस संस्था में ले चलो। उसको ठण्ड में नहाने की समस्या थी इसलिए दिल्ली ले जाने में आज-कल, आज-कल करता रहा और इसी बीच मथुरा में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र खुल गया। सेवाकेन्द्र खुलने का परिचय देने के लिए भ्राता जगदीशराम आनन्द (बृजमोहन भाई जी के लौकिक पिताजी) पर्चे बाँट रहे थे। एक पर्चा उन्होंने कृष्णदेव संन्यासी को भी दिया। उन्होंने वो पर्चा मुझे दिखाया। मुझे बड़ी खुशी हुई और हम दोनों शाम को सात बजे सेवाकेन्द्र पर पहुँच गए। वहाँ क्लास खत्म होने के बाद योग चल रहा था। पालू दादी (दादी धैर्यमणि) ने हमसे परिचय पूछा। मैंने शरीर का नाम बताया। उन्होंने कहा, शरीर नहीं, आप आत्मा हैं, इस प्रकार संक्षिप्त में ज्ञान समझाया। फिर कहा, एक सप्ताह का कोर्स करना पड़ेगा। हमने पूछा, दक्षिणा क्या देनी पड़ेगी? दादी ने कहा, एक आना और 5 खोटे पैसे देने पड़ेंगे। हम समझे नहीं तो स्पष्ट किया कि हर रोज एक बार सेवाकेन्द्र पर जरूर 'आना' और '5 विकारों' का दान देना। फिर मैंने दोनों समय जाना शुरू कर दिया। मुझे भय था कि कहीं सात दिन का कोर्स पूरा होने के पहले ही शरीर ना छूट जाए इसलिए चार दिन में ही सुबह-शाम करके कोर्स पूरा कर लिया। कोर्स पूरा होने के बाद मुझसे निश्चय-पत्र लिखवाया गया। मैंने लिखा, बाबा हमने आपको पहचान लिया है, हम आपके बनके रहेंगे, हम आपसे साकार में मिलना चाहते हैं। फिर दादी के नाम बाबा का उत्तर आया और कहा, बच्चे को यज्ञ के खर्चे से बाबा के पास ले आओ। इस प्रकार, साकार तन में निराकार का सत्य परिचय पाकर 12 साल की आयु से प्रारम्भ हुई खोज सम्पन्न हुई। मुझे बिना हाथ-पैर वाले अर्थात् अशरीरी, निराकार शिव मिल गए। उन्हीं दिनों मातेश्वरी जगदम्बा का दिल्ली में आना हुआ। मम्मा के साथ एक सप्ताह भर दिल्ली में रहने और उनसे पालना पाने का सुन्दर मौका मिला। फिर मथुरा वापस आ गया।

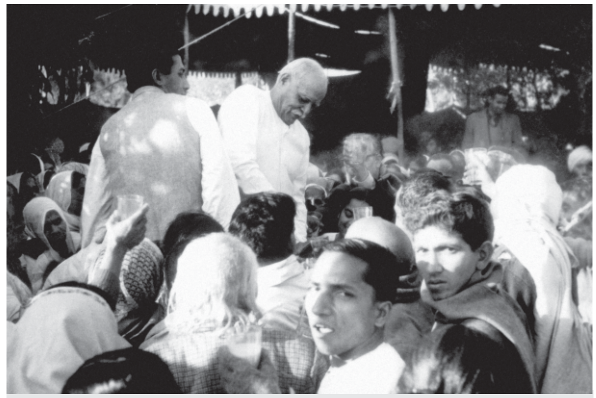

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के साथ ब्र.कु.रामेश्वर भाई (11-22 फरवरी 1965, नई दिल्ली)

कामेश्वर से रामेश्वर

मथुरा आकर सोचा, अब बाबा के बच्चे बन गए तो कुछ कमाना चाहिए। दिल्ली में एक ब्रह्माकुमार डॉ.भाई के पास 75 रुपये महीना की पगार से दादी ने मेरी नौकरी लगवा दी। दो साल के बाद बाबा से मिलने आबू जाना हुआ। हिस्ट्री हॉल में बाबा से मुलाकात हुई। बाबा ने कई सवाल पूछे। मैंने ज्ञानयुक्त उत्तर दिए और बाबा को कहा, मुझे यहीं पाण्डव भवन में रख लीजिए। बाबा ने कहा, अभी तो सेवा कम है, फिर आपको बुलाएंगे। अगली बार बाबा से मिलने गए तो धोबीघाट की सेवा मिली। बाबा 10.30 बजे थाली भरकर टोली ले आते थे, प्यार से खिलाते थे। फिर गाय को भी टोली खिलाते थे। **(शेष..पृष्ठ 25 पर)**

आदर्श राजयोगी, कर्मयोगी प्रजापिता ब्रह्मा

ब्रह्माकुमार विद्यासागर, रोहिणी, दिल्ली

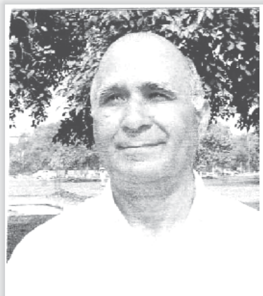

मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय (मालवीय नगर सेवाकेन्द्र, दिल्ली) के सम्पर्क में सन् 1963 में आया और ईश्वरीय शिक्षाएँ प्राप्त कर राजयोग का अभ्यास करते-करते मुझे दृढ़ विश्वास हो गया कि स्वयं परमपिता शिवबाबा, प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा देकर नई दुनिया की पुनर्स्थापना कर रहे हैं। मेरे अन्दर तीव्र इच्छा हुई कि मैं स्वयं बापदादा से मिलूँ। कॉलेज का विद्यार्थी होने के कारण सन् 1964 में मई-जून की छुट्टियों में ही यह सम्भव हो सका।

तुम सिर के ताज हो

जैसे ही पाण्डव भवन (माउण्ट आबू) में पहुँचकर नहा-धोकर आँगन में आये तो देखा कि बापदादा स्वयं आँगन में आ गए हैं और फिर हम बच्चों से मिले। ऐसे लग रहा था जैसे कि बाबा बहुत समय से इन्तजार कर रहे थे कि मैं अपने कल्प के बिछुड़े हुए बच्चों से मिलूँ। बाबा क्लास में या अपने कमरे में ही बच्चों से मिलन मनाते थे लेकिन उस दिन वे रुक नहीं सके और हमें अपने साथ हिस्ट्री हॉल की छत पर ले गये। वहाँ हमारे साथ ज्ञान वार्तालाप करते हुए रास्ते की सारी थकान दूर कर दी। निरहंकारी और बेहद निर्माणचित्त बाबा ने प्रेम भरी दृष्टि देते हुए महावाक्य उच्चारे, ''बच्चे, बापदादा हथेली पर तुम बच्चों के लिए बहिश्त लाये हैं।'' बाद में नियमानुसार क्लास रूम में परिचय सहित मिलन हुआ। बाबा की बातचीत में बहुत ही मिठास थी जैसे कि वो मिठास के पहाड़ हों। मिलन मनाते हुए ऐसा अनुभव हो रहा था कि कल्प से बिछड़ा बाप अपने खोये हुए बच्चों को पाकर आनन्द और खुशी में किलकारियाँ मार रहा हो। बाबा कभी भी बच्चों को पाँव नहीं छूने देते थे। हमने पाँव छूने के लिए हाथ बढ़ाया मगर बाबा ने हाथ पकड़कर कहा कि बच्चे, तुम तो मेरे सिर के ताज हो, बाप अपने सिर के ताज को पाँव कैसे छूने देंगे।

तुम संग बैठूँ, खेलूँ...

हम बच्चे जानते हैं कि हम जन्म-जन्मान्तर के पापी हैं और अपने को पावन बनाने के लिए अपने अति प्यारे बाबा से मिल रहे हैं लेकिन बाबा ने कभी भी महसूस नहीं होने दिया कि तुम पतित हो बल्कि सदा यही कहा कि तुम मेरे सिकिलधे, दिलतख्तनशीन, घर के शृंगार, होवनहार विश्व महाराजन, सृष्टि के आधारमूर्त, नूरे रत्न बच्चे हो। बाबा का वात्सल्य पाकर लगा कि 'जो पाना था सो पा लिया' और अतीन्द्रिय सुख का, आनन्द का अनुभव प्रैक्टिकल में होता रहा। बापदादा सेवाकेन्द्र की पार्टी के साथ भोजन करते, नाश्ता करते, पर्सनल मिलन करते, बैडमिन्टन खेलते, साथ बैठकर झूले पर झुलाते, अनेकों कर्म संग-संग करते। इससे स्वत: दिल से निकलता, तुम्हीं संग बैठूँ, जी भरकर बातें करूँ, खेलूँ, विचरण करूँ, खाऊँ, पीऊँ आदि-आदि।

क्लास रूम को बना देते थे अव्यक्त

मकान निर्माण, भोजन की व्यवस्था, हर विभाग का मार्गदर्शन – ये सब बापदादा करते थे जिससे यज्ञ सुचारु रूप से चले। हर कार्य में खुद हाथ बंटाते थे, चाहे सब्जी काटना, चाहे अनाज साफ करना। आन्तरिक और बाहरी सफाई आदि का पूरा इशारा देते और करवाते थे। बाबा से मुरली सुनते-सुनते हम ऐसा महसूस करते थे कि जैसे हम धरती पर नहीं हैं, सूक्ष्मवतन में हैं। हमारे ऊपर जैसे सफेद लाइट की एक बहुत तेज बौछार पड़ रही है। बाबा अपनी शक्ति से सारे क्लास रूम को अव्यक्त बना देते थे जिससे

मन खुशी में नाच उठता था।

लाइट-माइट हाउस बनकर रहे अडिग

सारी सृष्टि को पावन करने का इतना बड़ा कार्य करते बाबा ने महावीर, युधिष्ठिर, एडम, आदम, अंगद आदि सारे टाइटलों का प्रमाण दिया। धर्मनेताओं द्वारा, राजनैतिक नेताओं द्वारा, लौकिक सम्बन्धियों द्वारा, सामाजिक संस्थाओं द्वारा, घर के बच्चों द्वारा यज्ञ पर समय प्रति समय भारी तूफान आये लेकिन युगपुरुष प्रजापिता ब्रह्मा बच्चों के आगे लाइट हाउस, माइट हाउस बनकर अडिग रहे। मधुबन में आने वाले बच्चों का सौ प्रतिशत से भी ज्यादा ध्यान रखा। उनके रहने-खाने-पीने की सुव्यवस्था के साथ आबू रेलवे स्टेशन से लाने और वापस स्टेशन तक छोड़ने की आरामदायक व्यवस्था की, जो आज तक भी हो रही है। प्यार का ऐसा उदाहरण बापदादा ने प्रस्तुत किया।

बहुत निरहंकारी थे बाबा

बाबा बहुत निरहंकारी थे। मैं एक बार उस सभा में मौजूद था जिस सभा में, अंधेरे में प्रोजेक्टर द्वारा प्रदर्शनी के चित्रों पर कैसे समझाया जाये, इसकी प्रैक्टिस चल रही थी। बाबा संदली पर बैठे थे। उन्होंने पाया कि संदली की जगह बदली जाये ताकि वे प्रोजेक्टर के चित्रों को अच्छी तरह देख सकें। बिना किसी को आदेश दिये, वृद्ध तनधारी बाबा ने खुद संदली उठा कर ठीक स्थान पर रख दी। मुझे बहुत अचम्भा हुआ कि देखो, बाबा कह सकते थे कि बच्चे इसका स्थान परिवर्तन करो मगर ऐसा उन्होंने नहीं किया। प्रतिदिन जितने भी पत्र आते थे, उनके उत्तर बाबा तुरन्त देते थे चाहे पत्र किसी भी बच्चे का हो। कोई भी नहीं कह सकता कि बाबा ने मेरे पत्र का जवाब नहीं दिया। यहाँ तक कि अर्जेन्ट पत्र का जवाब टेलिग्राम या टेलिफोन से भी देते थे। बाबा ने खर्चे की परवाह नहीं की जबकि यज्ञ में पैसों की कोई आमदनी नहीं थी।

हर परिस्थिति में साथी थे

बाबा का व्यवहार हर आत्मा के प्रति प्रेम और वात्सल्य से परिपूर्ण था। मधुबन में कार्य करने वाले मजदूर, मिस्त्री आदि का भी पूरा ध्यान रखते थे। समय प्रति समय कपड़े, जरूरत की चीजें और प्रसाद आदि वितरित करते थे। वे केवल नाम के ही पिताश्री नहीं थे बल्कि हम सबके हर परिस्थिति में साथी थे। सच्चे पिता, सत्शिक्षक एवं सतगुरु थे। हरेक के बहुत प्रिय थे। मुझे पर्सनल अनुभव है, मैं जब आबू में होता था, उनसे जुदा नहीं होना चाहता था। उनके कमरे के सामने मकान की छत पर बैठा-बैठा उन्हें निहारता रहता था। दिल्ली में बाबा लोधी कालोनी में आये। मैं एक कोने में बैठा हुआ बाबा को और बाबा से मिलन मनाने आने वालों को देखता रहा। ऐसा प्यारा उनका संग था। यज्ञ में किसी भी बच्चे को, बाबा के व्यवहार से कोई शिकायत नहीं थी। सचमुच दया के सागर, प्रेम के सागर थे बाबा।

उनसे मिलकर दूर होती थी थकावट

उनका जीवन अति-अति श्रेष्ठ, पवित्र और महान था। उनका व्यवहार दैवी गुणों से ओत-प्रोत और हम सबके लिए उदाहरण था। वृद्ध तन होते हुए भी उन्हें कभी भी थकावट या आलस्य नहीं था बल्कि उनसे मिलकर हम सभी की थकावट दूर हो जाती थी और उमंग-उत्साह बढ़ जाता था। एक बार छोटे हॉल की छत पर बाबा अपने साथ पिकनिक करा रहे थे और बहलाते-बहलाते अचानक जोर से हाथ में हाथ बजाकर हंसे और फिर कहा कि मेरे होवनहार देवता बच्चों को कभी भी ऐसे हंसना नहीं है। बच्चे यह रावण सम्प्रदाय की हंसी है। जैसे कुम्हार मटका बनाते-बनाते उसके नुक्स निकालता है, ऐसे ही कदम-कदम पर बाबा ने छोटी-छोटी बातों पर शिक्षाएँ दीं। बैठने, बोलने, चलने और व्यवहार की कलाएँ सिखाईं।

अंत में शरीर छोड़ने से पहले विधाता (शिवबाबा) ने उनसे पूछा कि बच्चे चलना है? ब्रह्मा बाबा ने कहा कि जी बाबा, मैं तैयार हूँ। शिवबाबा ने कहा कि आपको यज्ञ का ख्याल तो नहीं आयेगा कि कैसे चलेगा?

(शेष..पृष्ठ 34 पर)

बाबा ने कहा, हिम्मत रखी है, तो बाप की मदद साथ है

ब्रह्माकुमारी कानन, कोलकाता

हम छह बहनें, एक भाई (गोपाल भाई, दिल्ली, पाण्डव भवन), माताजी, पिताजी (रत्न प्रकाश गुप्ता) इकट्ठे ही सन् 1962 में ईश्वरीय ज्ञान में चले। बचपन से ही मम्मा-बाबा, दादियों, बड़े भाई-बहनों – सबकी पालना मिलती रही इसलिए ज्ञान-मार्ग में कभी मेहनत नहीं लगी। सुदेश बहन हम सभी बहनों को कोर्स कराती थी। बाबा कहते थे, इन बच्चियों को अच्छे से तैयार करो। मैं तो तैयार हो गई, बाकी बहनें दोनों तरफ तोड़ निभा रही हैं।

बाबा ने सिलवाकर दी फ्राक और चूड़ीदार पजामी

जब प्रथम बार साकार बाबा से मिले तब हम गाजियाबाद में रहते थे, मेरी आयु सात साल थी। दिल्ली में मेजर की कोठी में परिवार सहित बाबा से मिले थे। बाबा ने कहा, ''बड़ी फैमिली आई है।'' इसके बाद पिताजी का तबादला जयपुर में हुआ और वहाँ से हम बाबा से मिलने मधुबन गए। बाबा हम बहनों को तितलियाँ कहते थे। बाबा ने हमें क्रम से खड़ा किया। तब चूँकि हम छोटे थे इसलिए सिर्फ फ्रॉक पहना था, नीचे पाँव नंगे थे। बाबा ने तुरन्त दर्जी को बुलवाया और हम छह बहनों के लिए फ्रॉक के साथ चूड़ीदार पजामी सिलवा दी और पहनने को कहा। यकीन मानिए कि इस फ्रॉक और चूड़ीदार पजामी में ऐसा जादू था कि हर शनिवार ऑफ यूनिफॉर्म में मैं जयपुर स्कूल में यही पहनकर जाती थी।

खेल के समय खेल और पढ़ाई के समय पढ़ाई

हम छोटे बच्चों के लिए बाबा ने लच्छू दादी के हाथ मधुबन में हमारे कमरे में खिलौने भेजे। हम खेल में लग गए। रात को हिस्ट्री हाल में क्लास होती थी। बाबा आए, पूछा, बच्चियाँ कहाँ हैं? एक बहन ने हमारे बारे में बताया कि खेल रही हैं। बाबा ने कहा, बुलाओ बच्चियों को। जब हम बाबा के सामने गए तो बाबा ने कहा, खेलने के समय खेलो और पढ़ने के समय पर पढ़ो। इस प्रकार बाबा ने समयानुसार कार्य करने का पाठ उस बाल्यावस्था में ही पढ़ा दिया। इसके बाद हम रोज रात को बड़े उमंग से हिस्ट्री हॉल में क्लास में जाने लगे।

ज्ञान की खुमारी

उस समय बाबा ने बड़े-बड़े चित्र और ग्रामोफोन हमें दिये थे। अत: घर में सुबह चार बजे से ही बाबा के गीत बजने शुरू हो जाते थे और हम योग इतना करते थे कि जैसे हमें ही पहले नंबर में आना है और विनाश से पहले तैयार हो जाना है। स्कूल में योग लगता था कि नहीं, ये नहीं मालूम लेकिन हर घन्टे चार्ट लिखते थे और बाबा को भेजते थे। खुश होकर बाबा ने और आगे बढ़ाने के लिए कहा, ''प्रजा बनानी है तो ज्ञान भी सुनाना है।'' तब जयपुर में म्यूजियम नया बना था और आनंदकिशोर दादा उसे सम्भालते थे। हमने सोचा कि हम छोटे बच्चों को गाइड बनकर समझाने का मौका नहीं मिलेगा इसलिए हम नीचे छोटे बच्चों को पर्चे बाँट आते थे ताकि बच्चे ऊपर आयें और हम उन्हें ज्ञान समझायें। ऐसी ज्ञान की खुमारी चढ़ती थी।

एक बार बाबा ने मुझे कहा, ''राजा बनना है तो आठ घन्टे योग तो जरूर करना पड़े।'' बस, बात ही क्या थी? मैंने आठ घंटे के पुरुषार्थ का चार्ट रखना शुरू कर दिया और बाबा को जब रूबरू मिले तो दिखाकर शाबाशी ली।

एक्यूरेट उत्तर

एक बार दार्जिलिंग गये तो मुझे ख्याल आया कि इतनी ऊँची पहाड़ियों पर बाबा का संदेश कौन पहुँचायेगा? दूसरे दिन मुरली में बाबा ने जवाब देते हुए कहा कि 'मीडिया सेवा

करेगा।' फिर एक दिन मुझे ऐसे ही विचार आया कि जब मीडिया भी कार्य नहीं कर सकेगा उस परिस्थिति में बाबा की सेवा कैसे होगी? तो मुरली के गहन अभ्यास से पता चला कि बाबा ने कहा है, ''बच्चे, तुम्हें सेवा की ज्यादा चिंता नहीं करनी है। शास्त्रों की तरह किताबें भी तैयार हो जायेंगी। अंत समय बाबा सबको साक्षात्कार से अपना बनायेगा, आदि सो अन्त।'' क्या ऐसा एक्यूरेट उत्तर सिवाय भगवान के और कोई दे सकता है?

जब मैं समर्पण हुई तो बाबा ने यही वरदान दिया था, ''बच्ची, हिम्मत रखी है, तो बाप की मदद साथ है। हाई जम्प लगाया है तो रोड़े-पत्थर आएँगे नहीं।'' फिर बाबा ने परदादी के पास जाने का प्रोग्राम स्वयं दिया और अपने हस्तकमल से अँगूठी पहनाई। बाबा के हर वरदान को जीवन में कदम-कदम पर साकार होते पाया है। सेवा के हर कार्य में बाबा की मदद अनुभव होती रही है।

जीवन में सबसे बड़ी अथॉरिटी 'अनुभव' की है। अगर ज्ञान समझ भी लिया मगर अनुभव नहीं किया तो कुछ मायने नहीं रखता। अत: पाठकगण से मेरी गुजारिश है कि वे ज्ञान और योग की पूरी समझ पाकर अनुभव की अथॉरिटी बनें और महसूस करें कि सच क्या है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग हर कल्प में एक ही बार आता है और प्रभु मिलन की वेला भी बार-बार द्वार पर दस्तक नहीं देती। इसलिए सर्व के प्रति यही शुभभावना तथा शुभकामना है कि अनुभव की अथॉरिटी बनकर अपना यह अमूल्य जीवन सफल करें। ❖

शिवा से शिव की अनुभूति

ब्रह्माकुमारी अमिता माथुर, लखनऊ

बात सन् 2010 की है। मेरे ज्येष्ठ पुत्र, जिसका नाम शिवा था, ने अचानक शरीर छोड़ दिया। शिवा के इस तरह अचानक देह-त्याग से पूरे परिवार पर संकट आ गया। मैं, मेरे पति व मेरा छोटा बेटा – तीनों ही इस अचानक हुए बिछोह से बहुत दुखी थे। समझ में नहीं आ रहा था कि आगे का जीवन हम कैसे जी पायेंगे। मेरे पति ने धीरे-धीरे खुद को व बेटे को तो संभाल लिया किंतु मेरी स्थिति उनके नियंत्रण से बाहर थी। वे मुझे धार्मिक स्थलों, मित्र-संबंधियों इत्यादि के पास लेकर जाते थे किंतु मेरा अशान्त मन किसी तरह से भी शांत नहीं हो रहा था। वो समझ नहीं पा रहे थे कि मुझे, घर व बेटे को कैसे संभालें व शांति से अपनी नौकरी कैसे करें।

इसी बीच मेरा ललितपुर अपनी एक सहेली के यहाँ जाना हुआ। वहाँ वो ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाती थी। उसके साथ मैं भी एक-दो दिन वहाँ गई तो ऐसा अहसास हुआ कि शायद यही वो जगह है जिसकी मुझे तलाश है। तीन दिन के बाद हम लोग लखनऊ वापस आ गये। शिवा के जाने के बाद ललितपुर के वे तीन दिन सबसे ज्यादा शांति के थे। ललितपुर से ही कुछ दिनों बाद कुछ लोग आबू पर्वत जा रहे थे और मुझे भी चलने का निमंत्रण मिला। शिवा से दूर होकर 'परमपिता शिव' से मिलन मनाने की यह भूमिका थी। आबू पर्वत जाकर तो ऐसा लगा कि इसी जगह की हमें जन्म-जन्मान्तर से तलाश थी। इसके बाद बाबा की चुम्बकीय शक्ति ने ऐसा खींचा कि हमने उनकी श्रीमत पर चलना शुरू कर दिया। बाबा से मिली शक्ति से, मन में जो शिवा की याद की टीस थी, वो ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति के रूप में बदल गयी।

'शिव बाबा' का वास्तविक परिचय मिलने के बाद जीवन जीने की दिशा ही बदल गई। जीवन से लोभ, मोह, भय, अहंकार इत्यादि बुराइयाँ केवल बाबा की याद में रहने से ही खत्म होती चली गईं और सारे लौकिक कार्य भी इतनी सहजता से निपटते रहे हैं कि लगता है, बाबा स्वयं आकर मेरी मदद करते हैं। अब तो ऐसा महसूस होता है कि बाबा क्या मिले, जीवन में सब कुछ मिल गया। ❖

बाबा ने कहा, सैम्पल बहुत अच्छा है

ब्रह्माकुमारी कुलदीप, कटक

सन् 1966 में मेरे नानाजी तलवाड़ा (पंजाब) में रहते थे। वहाँ एक युगल (मेहरचन्द शर्मा तथा सावित्री बहन) के घर में ईश्वरीय ज्ञान की क्लास चलती थी। वहाँ से नानाजी को ईश्वरीय ज्ञान मिला। उन्होंने घर में सबको सुनाया। मुझे, मेरी माताजी को तथा मौसी (उल्हास नगर की ब्रह्माकुमारी सोम बहन) को ज्ञान समझ में आ गया। उस समय मेरी आयु केवल 13 साल की थी।

बच्ची बाप की सेवा करेगी

सन् 1967 में मैं, नानाजी, माताजी तथा मौसी – हम चारों बाबा से मिलने गए। कई कन्याएँ बाबा से मिलने आई थीं। उन सबने रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए थे, एक मैं ही सफेद साड़ी पहने हुए थी। ब्रह्मा भोजन के बाद जब पान-सुपारी (मीठी गोलियाँ) लेने बाबा के सामने गई तो बाबा ने कहा, ''सैम्पल बहुत अच्छा है, यह बच्ची बाप की सेवा करेगी। बच्ची, लौकिक-पारलौकिक बाप का नाम बाला करना है।'' बाबा को देखकर ऐसा लगा कि यह बाबा ही मेरा असली मात-पिता है और मैंने अपनी लौकिक माता जी से कहा कि मुझे यहाँ ही बाबा के पास छोड़ दीजिए, मैं लौकिक घर वापस नहीं जाऊँगी परन्तु ऐसा हो नहीं सका और मैं माउंट आबू से आबू रोड तक रोते-रोते ही आई बाबा से बिछुड़ने के गम में। बाबा ने जो-जो वरदान दिए वो सब जीवन में साकार हो रहे हैं।

ज्ञान के गीत बनाकर गाऊँगी

बाबा को भक्ति मार्ग के गीत आदि पसन्द नहीं थे। एक बार मैंने बाबा के साथ झूला-झूलते समय भक्ति मार्ग का श्रीकृष्ण का भजन गाया। बाबा ने कहा, ''बच्ची, भक्ति मार्ग के गीत गाती हो?'' उसी दिन से मैंने निश्चय कर लिया कि अब भक्ति मार्ग के गीत नहीं, ज्ञान के ही गीत बना कर गाऊँगी। पहले-पहले 18 जनवरी के बहुत सारे गीत जैसे कि 'तेरे शब्द कानों में हैं गूँजते...', 'ए मेरे प्यारे

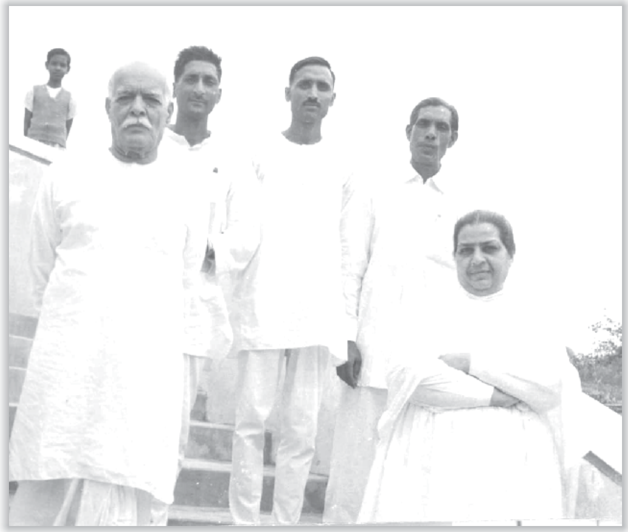

बाबा, बैठे वतन में जाकर...' आदि बाबा की प्रेरणा से बना कर गाए जो कि 'साकार यादें' नामक सी.डी. में रिकार्ड किए गए हैं।

एक धक से हुई समर्पित

बाबा से मिलने के बाद जीवन में सादगी आ गई। खान-पान-संग सब ज्ञान-युक्त हो गया और सेवा में एक धक से समर्पित हो गई। ऐसा समर्पण पंजाब में सबसे पहले मेरा ही हुआ था। एक दिन भी सेवाकेन्द्र पर ट्रेनिंग लिए बिना मात्र 16 वर्ष की आयु में दृढ़ निश्चय कर लिया कि ब्रह्माकुमारी बनना ही है, चाहे जो भी हो। लौकिक घर वाले मोह के कारण छोड़ने को राजी नहीं थे लेकिन मेरा मन तो सदा बाबा की सेवा के लिए ही बेचैन रहता था। आखिर 24 जून (मम्मा का दिन), 1969 का वह भाग्यशाली दिन आया जब लौकिक सम्बन्धियों ने पूरे दान-दहेज सहित मुझे जालन्धर सेवाकेन्द्र पर समर्पित कर दिया।

बाबा सत्य है, हम भी सच्चाई पर चलते हैं तो बाबा की बहुत-बहुत मदद मिलती है। 'एक बल एक भरोसे' पर तथा सदा श्रीमत पर चलने से बाबा के प्यार का बहुत-बहुत अनुभव होता है। ❖

बाबा ने कहा, बच्ची जागती ज्योत है

ब्रह्माकुमारी विमला, रुड़की (उत्तराखण्ड)

मैंने सन् 1962 में अम्बाला कैंट में ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया और सन् 1963 में ईश्वरीय सेवा में जीवन समर्पित कर दिया। सन् 1963 में साकार बाबा ने मुझे देहरादून भेजा। इसके बाद लखनऊ और करतारपुर (पंजाब) में सेवार्थ जाना हुआ। प्रस्तुत हैं मम्मा-बाबा की अलौकिक पालना के महानतम् भाग्य की कुछ झलकियाँ–

तुम तो निर्बन्धन हो

एक बार अम्बाला कैंट सेवाकेन्द्र पर जब मैं क्लास में बाबा के महावाक्य (मुरली) सुन रही थी तब बाबा के कुछ शब्द तीर की तरह लग गये। बाबा ने कहा, ''कोई बच्चे माँ के मोह के कारण, कोई बहन के मोह के कारण, कोई सहेलियों के मोह के कारण सेवा में जीवन नहीं लगाते हैं।'' बाबा ने 2-3 बार ऐसा कहा तो मुझे लगा कि बाबा मुझे ही कह रहे हैं। मैंने घर में आकर कहा कि मैं ईश्वरीय सेवा पर जाऊँगी, तो घर में सबने मना कर दिया। मुझे बड़ा दुख हुआ। फिर मैंने मधुबन में ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा, ''बाबा, मुझे तो बड़ा बन्धन है, छुट्टी मिलती नहीं, सेवा कैसे करूँ?'' बाबा ने मेरे पत्र का जवाब भेजा, ''बच्ची, तुम तो निर्बन्धन हो।'' यह जवाब पाकर मैं बहुत खुश हो गई और निर्णय कर लिया कि कैसे भी सेवा में जाऊँगी जरूर। उन्हीं दिनों देहरादून में नया-नया सेवाकेन्द्र खुला था। वहाँ प्रेम बहन अकेली थी तो मुझे वहाँ जाने के लिए कहा गया। मैंने जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया और घर आकर बताया कि 15 दिन के लिए देहरादून जाना है, जरूरी जाना है। पहले तो सबने मना किया लेकिन मैं दृढ़ रही और इस प्रकार मेरे बन्धन ढीले पड़ते-पड़ते खत्म हो गए।

वरदान ही चला रहा है मुझे

कुछ समय बाद मधुबन में बाबा से साकार में मिलने का सुअवसर आया, तब का अनुभव निराला ही है। तब मेरे लौकिक पिताजी ने शरीर छोड़ा था। मैं दुखी थी परन्तु बाबा को देखते ही ऐसे लगा, यही मेरे पिता हैं। लौकिक, अलौकिक पिता की पालना मुझे साकार बाबा से मिली। मधुबन में एक सुबह चार बजे नहा-धोकर अपने कमरे के बाहर दरवाजे पर खड़ी थी। और सब बहनें तो अन्दर ही थीं। इतने में क्या देखा कि सन्तरी दादी का हाथ पकड़े बहुत दूर से बाबा मेरी ओर चलते आ रहे हैं। मैं भी बाबा को देखती ही रही। जब पास पहुँचे तो बाबा ने सन्तरी दादी को कहा, ''देखो, ये जागती ज्योत बच्ची खड़ी है।'' वहाँ से फिर बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा, मैंने बाबा का हाथ पकड़ा और काफी दूर तक हम साथ-साथ चले। बाबा ने इस बीच मुझसे कहा कि जो बच्चे सवेरे-सवेरे उठते हैं तो बाबा उन्हें बहुत प्यार करता है। बाबा ने ये जो जागती ज्योत का वरदान दिया, मैंने देखा, आज दिन तक जीवन में कायम है। चाहे कुछ भी हो, चाहे मैं बीमार भी हूँ लेकिन सवेरे चार बजे जाग जरूर आ जाती है। मुझे लगता है कि यह वरदान ही मुझे चला रहा है, यह बाबा की शक्ति है।

शान्ति बन गई जीवन का अंग

एक बार बाबा ने किसी से पूछा, इस बच्ची का क्या नाम है? उसने उत्तर दिया, विमला। बाबा ने कहा, ये तो शान्ति बच्ची है। मुझे पता नहीं चला कि बाबा ने मुझे शान्ति क्यों कहा? वैसे तो शान्त रहती थी लेकिन पहले मेरी आदत थी, थोड़ा-सा कभी किसी को कुछ बोल भी देती थी लेकिन उसके बाद, मुझे कोई कुछ कह भी देता था मैं चुप ही रहती थी, शान्त ही रहती थी और इस तरह शान्ति मेरे जीवन का अंग बन गई।

संस्कार परिवर्तन

एक बार की बात है, मैं सेवाकेन्द्र पर थी, मुझे वहाँ से कुछ दिनों बाद मधुबन जाना था। इसी बीच लौकिक घर गई और वहाँ से लेडी-मिन्टन (बहुत बढ़िया कपड़ा) के 4 ब्लाउज सिलवा कर ले आई। सेन्टर पर मुझे किसी ने नहीं कहा कि क्यों सिलवा कर लायी हो। मैं उन्हें लेकर मधुबन चली गई। वहाँ जाकर मुझे महसूस हुआ कि मैं जो लेडी-मिन्टन के ब्लाउज सिलवा कर लाई हूँ उनके विषय में बाबा को किसी ने कुछ कहा है और यह भी महसूस हुआ कि जैसे बाबा ने कहा, इस बच्ची में और तो कुछ नहीं है लेकिन थोड़ी-सी आसक्ति है। बाबा ने मुझे देखा, बड़ा प्यार किया और बहुत प्यारी बच्ची कहा। बाबा ने मेरे सामने ऐसा कोई जिक्र नहीं किया। जब वापस आने का समय हुआ तो बाबा ने किसी को कुछ, किसी को कुछ सौगातें दी। मुझे 2 ब्लाउज दिये, वो ऐसे थे कि उनमें 12 जोड़ लगे थे लेकिन किसी ने इतने अच्छे सिले थे कि जोड़ डिजाइन लगते थे मानो विदेश के सिले हुए हों। उनका कपड़ा बहुत महीन था लेकिन सुन्दर इतने थे कि क्या कहा जाए! सचमुच मुझे वो बहुत प्यारे लगे, बहुत दिल से उन्हें पहना, बार-बार पहना, जब तक कि वे फट नहीं गये। इस प्रकार बाबा ने मेरा यह संस्कार सहज ही परिवर्तन कर दिया।

बाबा के बोल और बाबा के वरदान आज भी मेरे कानों में गूँजते रहते हैं और बाबा की सूरत नजरों में समायी रहती है। ऐसे थे मेरे बाबा। सन् 1980 से रुड़की में ईश्वरीय सेवाएँ दे रही हूँ। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका का हर लेख अनुभवीमूर्त बनाता है, जिसे शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। लेख 'कर्मभोग पर कर्मयोग की जीत' एवं रमेश भाई द्वारा लिखित 'संविधान' बहुत जानकारियाँ देकर गया। 'कर्मों की गुह्य गति – मेरा अनुभव' पढ़कर यह विश्वास पक्का हुआ कि ज्ञान-योग के साथ-साथ शरीर की भी सम्भाल की जाये क्योंकि शरीर ठीक नहीं तो बुद्धियोग बाप के साथ लग नहीं सकता। लेख 'इतिहास के अनछुए पन्ने', 'रूहानी सर्जन की रूहानी जादूगरी – दुर्घटना बनी इलाज' एवं सितम्बर मास में प्रकाशित 'पूजा के रहस्य' बहुत सारे अनसुलझे सवाल सुलझा गये। ज्ञानामृत के हर शब्द में आत्मा को तृप्त करने वाला अमृत है। मीठे बाबा व हर निमित्त आत्मा का दिल की गहराइयों से आभार!

– ब्र.कु.संतोष राठौर, जीवन पार्क, नई दिल्ली

नवम्बर माह में प्रकाशित लेख 'समस्या को सुअवसर में परिवर्तन करने की कला' अत्यन्त सारगर्भित, हृदयस्पर्शी एवं प्रभावशाली है। यह रचना किसी भी पाठक के जीवन पथ को सुगम बनाने में निश्चित रूप से सहायक होगी। नवीनतम शैली में रचना के प्रकाशन के लिए सम्पादक एवं लेखक को हार्दिक धन्यवाद।

– ब्र.कु.सुदाम, राउरकेला (उड़ीसा)

मैं कुछ ही माह से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा हूँ। सौभाग्यशाली हूँ कि अल्पकाल में ही शांतिवन आने का सुअवसर मिला। उस अलौकिक जगत से आने के बाद स्वयं को पंखों वाला पक्षी महसूस कर रहा हूँ। फिर सोने पर सुहागा, मेरी छोटी-सी रचना 'मिल गयी मंजिल' अक्टूबर के ज्ञानामृत अंक में छपी। इतने असीम आनंद की अनुभूति हुई, जो अवर्णनीय है। बारंबार धन्यवाद।

– डॉ.प्रमेन्द्र देशवाल,
प्रधान सम्पादक, 'आर्यपुत्र', रुड़की

बाबा ने कहा, बच्ची को सेवा के लिए देश-विदेश भेजूँगा

ब्रह्माकुमारी कुलदीप, हैदराबाद

बाल्यकाल से ही सफेद कपड़े पहनना मुझे बहुत पसंद था। लौकिक पिता जी का भी विचार था कि ब्रह्माकुमारी बनना है तो इनको रंगीन कपड़े नहीं पहनाने हैं। स्कूल की यूनिफॉर्म के अलावा हमारे पास सिर्फ सफेद कपड़े ही थे। माता जी की चुन्नी लपेट कर हम दीदी बन जाते थे। मैं कहती थी कि मुझे छोटे-छोटे बर्तन ला कर दो, मैं सेन्टर खोलूँगी। कोई भी कागज हाथ में लेकर हम उम्र बच्चों को ज्ञान सुनाया करती थी। ज्ञान में आने से पहले हमारे घर में अण्डे प्रयोग किए जाते थे लेकिन ज्ञान में आने के बाद माताजी-पिताजी ने प्याज, लहसुन, अण्डे आदि प्रयोग करने बंद कर दिये और हम बच्चों को भी बताया कि अण्डे खाएंगे तो पाप लगेगा। मैं तो मासूम थी, जैसे उन्होंने हमको समझाया, ऐसा साथी बच्चों को भी बताने लगी। मेरे ऐसे संस्कार देखकर लौकिक पिताजी को बहुत खुशी होती थी कि यह ब्रह्माकुमारी बनना चाहती है। जब आठ साल की थी तब आगरा से आबू पर्वत बाबा को मिलने गये थे। आगरा की विमला बहन हम तीनों (दो बहनें, एक भाई) को एक्शन सांग सिखाती थी और लौकिक माता जी सिखाती थी कि एक्शन सांग के बाद बाबा की गोदी में जरूर जाना।

योग, ध्यान, रास द्वारा सेवा

एक दिन बाबा ने पूछा, ''बच्चे, ये गोद में जाना किसने सिखाया।'' मेरा भाई व बहन दोनों शरमा गए, कुछ नहीं बोले। मैंने कहा, ''मम्मा (लौकिक माँ को मम्मा बोलते थे) ने सिखाया।'' बाबा ने मम्मा की ओर देखा और पूछा, ''अच्छा मम्मा, इस बच्ची को तुमने सिखाया गोद लेना?'' मैंने कहा, ''नहीं, मेरी मम्मा वो (सभा में) बैठी हैं।'' सब लोग हँसने लगे, मुझे रोना आ गया कि सही उत्तर देने पर भी लोग हँसते क्यों हैं? बाल्यकाल से ही योग लगाना, ध्यान में भिन्न-भिन्न दृश्य देखना, रास करना और फिर सबको बताना – यह सेवा मैं करती थी। जब पटना में पिताजी की ट्रान्सफर हुई तब वहाँ एक भाई ने मुझे ध्यानावस्था में देखा। उसे संशय था कि पता नहीं ये ब्रह्माकुमारियाँ ध्यान में जाती हैं या नहीं। जब मुझे देखा तो कहा, ये छोटी बच्ची ढोंग तो नहीं कर सकती है तो सचमुच ब्रह्माकुमारी बहनें ध्यान में भी जाती हैं और रास भी करती हैं। उस दिन से वह भाई निश्चय बुद्धि बन गया।

बाबा, मुझे समर्पित कर लो

जब हम मधुबन गए तो पिताजी ने सिखाया कि वहाँ चंचलता नहीं करना। पिताजी ने मुझे यह भी कहा कि तुम बाबा को अपना संकल्प बताओ कि मुझे यज्ञ में समर्पित होना है। मैं संकोच के साथ बाबा के कमरे में गई। बाबा ने हाथ पकड़ा और पूछा, ''क्या बच्ची गुड नाइट करने आई हो?'' मैंने कहा, ''हाँ बाबा। बाबा, आप मुझे समर्पित कर लो।'' बाबा को हंसी आ गई और बोले, ''तुम तो अभी छोटी बेबी हो, 10वीं क्लास पढ़कर हिंदी, सिंधी, अंग्रेजी सीखकर आओ, मैं तुमको देश-विदेश भेजूँगा।'' मैंने बाबा की वो बात मन में पक्की कर ली कि मुझे 10वीं क्लास तक ही पढ़ना है, उसके बाद समर्पित होना है।

मैं अपनी क्लास में हमेशा फर्स्ट आती थी और हर टीचर का मुझ से बहुत प्यार था। मैं भी अपने सभी टीचर्स का बहुत सम्मान करती थी और ज्ञान सुनाती थी। जब मैं 8वीं क्लास में हो गई तब मधुबन गई, तब बाबा अव्यक्त हो चुके थे। मैंने दादी जी को कहा, मुझे समर्पित कर लो। दादी जी ने पिताजी को कहा, अभी नहीं, अभी इसको

डिग्री कराओ, टाइपिंग, शॉर्टहैन्ड सिखाओ।

दादी ने किया पसंद

सन् 1971 में हैदराबाद में हमारे घर में गीता पाठशाला में दादी जानकी और सुंदरी बहन आए। तब मैंने दसवीं के पेपर दे दिये थे और मैं 17 साल की थी। पिता जी ने कहा, इसका लक्ष्य ब्रह्माकुमारी बनने का है। मैं चाहता हूँ, ये आगे पढ़े। प्राचार्य इसकी बहुत महिमा करते हैं और इसे आगे पढ़ाने के लिए बहुत उत्सुक हैं, अब मैं क्या करूँ? दादी जानकी ने भी कहा, अभी यह छोटी है, इसे पढ़ाओ। मैंने मन में सोचा, दादी तो चली जाएगी और मुझे छोड़ जाएगी। मैं सारी रात रोती रही। मैंने घरवालों को कहा, अगर मुझे अभी ब्रह्माकुमारी नहीं बनने देंगे और मैं कॉलेज में जाकर बिगड़ गई तो सारा दोष आप पर आयेगा। पिताजी ने यह बात दादी को बताई। फिर मैंने एक युक्ति अपनाई। सफेद साड़ी व पूरी बाजू का ब्लाउज पहनकर योग में बैठ गई और बाबा को कहा, बाबा, दादी आज मुझे पसंद कर ले तो मेरे जीवन का फैसला हो जायेगा। दादी स्टेज पर आई, मुझे देखती रही और सफेद लाइट होते ही दादी ने बोला, आज मुझे यह कन्या पसंद आ गई है, मैं इसे साथ ले जाऊँगी। उसी दिन दादी के साथ मैं पूना चली गई।

सन् 1972 में पूना से मधुबन की ट्रेनिंग में गई। ट्रेनिंग के बाद वापस पूना गई। एक साल दादी की पालना ली और फिर वापिस हैदराबाद आ गई। मेरे पिता जी को लगता था कि मेरी ये बच्ची मेरे घर की लक्ष्मी है इसलिए यहीं रहकर सेवा करे पर मैं हैदराबाद में नहीं रहना चाहती थी। मेरी इच्छा थी कि मैं हैदराबाद, लौकिक परिवार से दूर रहूँ। दादी ने मुझे समझाया कि तुम कमल पुष्प के समान रहो। ऐसा मत समझो कि ये मेरे माता-पिता हैं। दादी की इस श्रीमत का पालन करते हुए तब से मैं हैदराबाद की सेवा में उपस्थित हूँ। बाबा के वरदान अनुसार मुझे भारत के विभिन्न भागों में सेवा करने के साथ-साथ यू.के., यू.एस., फिलिपिन्स, दुबई, मलेशिया, चाइना आदि देशों में ईश्वरीय सेवा के सुअवसर मिले हैं। बेहद का शान्ति सरोवर बाबा ने बनाकर दिया है जहाँ देश-विदेश की आत्माओं की सेवा करने का सुनहरी सुअवसर हर पल मिलता रहता है। ❖

ओ ब्रह्मा बाबा यादों में तेरी...

ब्रह्माकुमारी रश्मि, गुमला (झारखंड)

ओ ब्रह्मा बाबा, यादों में तेरी, नयन सजल हो जाते हैं।
रूहानी स्नेह पाकर आपका, हम फूले नहीं समाते हैं।।

थी खूबी आपमें इतनी कि आप परमपिता को भा गए।
श्रीमत पर चलकर उनकी ही, नारायण पद पा गए।।

छोड़ हीरों का व्यापार, करने जगत का उद्धार।
हिला न सका बाबा आपको, माया का कोई भी वार।।

बनकर निराकारी, निरहंकारी, भूले सब दैहिक रिश्ते।
बन उपराम उड़ चले आप जैसे उड़े फरिश्ते।।

त्याग-तप की आपने हम पर छोड़ी है अमिट छाप।
देकर पालना माँ जैसी, वात्सल्य किरणें बिखेरते आप।।

कहने को तो बाबा आपका सूक्ष्मवतन में वास।
अव्यक्त रूप से देते रहते, आज भी हमें सकाश।।

ओ ब्रह्मा बाबा यादों में तेरी...
रूहानी स्नेह पाकर...

संन्यासी से बना...पृष्ठ 16 का शेष

रात को हम पहरा देने की सेवा भी करते थे, बाबा से अनेक बार मिले, बहुत प्यार पाया, वरदान पाए। बाबा ने ही मेरा नाम कामेश्वर से बदलकर रामेश्वर कर दिया। वर्तमान समय लौकिक घर में सेवा करते, हाजीपुर (बिहार) सेवाकेन्द्र पर क्लास करता हूँ और सीजन में ज्ञानामृत भवन में सेवा करने आता हूँ। ❖

बाबा ने मेरा भय निकाल दिया

ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी, ग्वालियर (म.प्र.)

मेरा जन्म सन् 1943 में मध्य प्रदेश के ग्वालियर शहर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। बचपन से ही श्रीकृष्ण को भगवान मानकर उनकी भक्ति करती थी। सन् 1966 में शिव बाबा के अनन्य रत्न ब्र.कु.महेन्द्र भाई ने आगरा से आकर ग्वालियर के व्यापार मेले में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई। मेरा लौकिक भाई हमारे सारे परिवार को व्यापार मेला दिखाने ले गया और कहा, मेले में एक नई चीज आई है, आओ तुमको दिखाकर लाऊँ, वो कहते हैं, गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, शिव है। मुझे ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहन ने प्रदर्शनी समझाई जो बहुत अच्छी लगी। सबसे अच्छी बात यह लगी कि यहाँ 7 दिन में भगवान मिलते हैं। मुझे भगवान की बहुत खोज थी। मैं अपनी माँ को कहती थी, या तो मुझे सेना में भर्ती करो या मीरा बना दो। जब पता चला, इतनी सरलता से यहाँ भगवान मिलता है तो बहुत खुश हो गई। जब कोर्स करने जाने लगी तो बड़े भाई ने बन्धन डालने शुरू कर दिए पर मैं छिप-छिप कर जाती रही और कोर्स कर लिया। ये बन्धन 18-20 साल चले।

शेरनी बनकर आओगी तब बाबा रखेगा

मैंने उन दिनों साकार बाबा को पत्र लिखा, ''बाबा मुझे पंख लगा दो, मैं आपके पास उड़कर आ जाऊँ।'' बाबा ने लिखा, ''बच्ची, मैंने तुमको पंख लगा दिए हैं, तुम आ जाओ।'' पहली बार मधुबन जुलाई, 1968 में गई, बाबा से मिली तो मैंने कहा, ''मैं स्वर्ग में आ गई हूँ, अब नरक में नहीं जाऊँगी।'' बाबा ने कहा, ''बच्ची, अभी तुम बकरी बनकर आई हो (मैं छिपकर गई थी), जब शेरनी बनकर आओगी तब बाबा रखेगा।'' बाबा ने मुझे बहुत प्यार दिया। लक्ष्मी-नारायण का एक बैज दिया और एक पर्स दिया। बाबा की गोदी भी मिली। बाबा ने मुझे माताओं में से उठाकर कन्याओं में बिठा दिया और कहा, तुम्हें रूहानी सेवा करनी है।

संगदोष से बचाना

मधुबन से वापस लौटने पर मुझे बाबा का दूसरा पत्र मिला जिसमें बाबा ने लिखा, ''बच्ची, शेरनी शक्ति बनकर सेवा करनी है, डरना नहीं है।'' दिसम्बर, 1968 में मैं फिर मधुबन गई, तब बाबा ने बोला, ''तुम्हें लौकिक परिवार से मरकर ईश्वरीय परिवार में जीना है।'' बाबा की यह बात सुनकर आत्मा में बहुत हिम्मत आ गई। एक दिन मैं बाबा के पास बैठी थी, तभी दादी प्रकाशमणि भी बाबा के पास आई। बाबा ने कहा, ''बच्ची, यह रुक्मिणी बच्ची बहुत भोली है, इसे संगदोष से बचाना।'' सचमुच दादियों को निमित्त बनाकर बाबा ने मुझे कदम-कदम पर संगदोष से बचाया।

भरपूर हो गई हूँ

मधुबन में बाबा ने पूछा, ''किसी चीज की कमी तो नहीं, आपको यहाँ अच्छा लग रहा है?'' मैंने कहा, ''बाबा, मैं भगवान के पास बैठी हूँ, मुझे सब मिल गया है, मैं भरपूर हो गई हूँ।'' मैंने बाबा को कहा, ''बाबा, मेरा भाई यहाँ आ गया तो चोटी पकड़कर, मार-मार कर मुझे ले जाएगा।'' बाबा ने कहा, ''बच्ची, तुम दो शब्द लिखकर देना, अगर वो हाथ भी लगाएगा तो मैं उसे पुलिस को सौंप दूँगा।'' बाबा के इन शब्दों से मेरे में इतनी ताकत आ गई जैसे कि बाबा ने मेरे को गोदी रूपी रक्षा-कवच में ले लिया है और मेरा भय निकल गया। जब 18 जनवरी को बाबा ने शरीर छोड़ा तब भी मैं मधुबन में थी। मेरे मन में घबराहट हुई कि अब क्या होगा? तब अन्दर से आवाज आई कि जो बाकी बच्चे करेंगे वही तुम करना अर्थात् दैवी परिवार के साथ मिलकर चलना। भाग्यविधाता बाबा ने मेरे भाग्य को पढ़ लिया। उन्हें पता था कि यह बच्ची कैसे बन्धन से छूटेगी। बाबा ने ही मुझे मुक्त बनाया। पिछले 30 सालों से ग्वालियर में सेवा कर रही हूँ। ❖

बाबा ने कहा, बच्ची सदा हर्षितमुख है

ब्रह्माकुमारी गोमती, जयपुर (अर्जुन नगर)

मई, 1968 में ईश्वरीय ज्ञान जयपुर (म्यूजियम) से प्राप्त किया। सुदेश बहन (अब विदेश में) ने साप्ताहिक कोर्स पूर्ण कराया और एक ही महीने के अन्तराल में 4 जून, 1968 को लौकिक चाचा एवं चाची (दोनों ज्ञान में चलते थे) के साथ मधुबन जाना हुआ। वहाँ मैं 10 दिन तक साकार बाबा की पालना में रही। परमात्म प्यार के कुछ अनुभव निम्नलिखित हैं –

अमृतवेले बाबा के वरदानी हाथ का अनुभव

मधुबन पहुँची तो साथी बहनों ने कहा, बाबा से 4 बजे अमृतवेले मिलने चलना है। मैं जीवन में कभी 4 बजे उठी नहीं थी तो मुश्किल लगा कि कैसे उठूँगी। साथी बहनों को कहा कि कैसे भी अमृतवेले 3 बजे जगा देना चाहे पानी डालकर भी। फिर मैं सो गयी। अगली सुबह 2.45 पर आँखें खुली और अनुभव हुआ कि बाबा सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, उठ बच्ची। फिर मैंने सभी साथी बहनों को जगाया और सबसे पहले तैयार होकर 4 बजे योग में पहुँची (उन दिनों बाबा 4 से 5 बजे तक योग कराया करते थे)।

आत्मा व परमात्मा के मिलन का अनुभव

सतगुरुवार के दिन अमृतवेले से पहले बाबा ने कहा, जो बच्चे अमृतवेले और भोग लेते समय बाबा से दृष्टि लेंगे वो पास होंगे। मैंने पूरा समय बाबा से दृष्टि ली। बाबा ने कहा, ये बच्ची पास है। कुटिया में बाबा से मिलने गये तो बाबा ने विशेष वरदान दिया कि ये बच्ची तो सदा हर्षितमुख है ही। जब कमरे में बाबा से मिले तो बाबा ने गोद में ले लिया। उस दिन यह अनुभव हुआ कि ये मिलन आत्मा व परमात्मा का है और उस दिन ही सम्पूर्ण निश्चय हुआ कि मुझ आत्मा का पिता स्वयं निराकार शिव परमात्मा ही है।

अपने हाथों से ओढ़ाया शाल

विदाई से पहले बाबा से सौगात लेने गये तो बाबा ने कहा, बच्ची, क्या सौगात लोगी? मैंने कहा, बाबा मुझे कुछ नहीं चाहिए, मेरे पास सब हैं। बाबा ने कहा, बच्चे बाप के घर आते हैं तो कुछ न कुछ तो जरूर लेकर जाते हैं, ये तो बाप के घर की निशानी है। फिर बाबा ने स्वयं अपने हाथों से मुझे शाल ओढ़ाया। लौटते समय बाबा ने मिश्री-बादाम खिलायी और रूमाल हिलाते-हिलाते देखते रहे। हमारे प्रेम के आँसू बहते रहे। ❖

श्रद्धांजलि

आप सबको ज्ञात हो कि प्यारे बापदादा की अति लाडली, साकार मम्मा-बाबा के हस्तों से पली हुई, पंजाब-होशियारपुर सेवाकेन्द्र की निमित्त सेवाधारी राजकुमारी बहन, जो कि सन् 1958 में ज्ञान में आई, सन् 1974 में समर्पित हुई, तब से अब तक आपने अपने अनुभवी जीवन द्वारा सभी भाई-बहनों की ज्ञान-योग से बहुत अच्छी पालना की। आपने 5 नवम्बर, 2016 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। ऐसी महान त्यागी, तपस्वी आत्मा को पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बाबा से मिला ईश्वरीय सेवा का वरदान

ब्रह्माकुमारी सरस्वती, लुधियाना

मेरी बड़ी बहन जगवती के ससुर दिल्ली में ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे थे। एक बार मेरे पिताजी (दिवंगत डॉ.मुंशी राम) उनसे मिलने दिल्ली गये। उन दिनों साकार ब्रह्मा बाबा दिल्ली के राजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र पर आये हुए थे। जब बहन के ससुरजी सुबह बाबा से मिलने जाने लगे तो मेरे पिताजी को कहा, आप यहीं रुकना, मैं सत्संग करके आता हूँ। पिताजी को आश्चर्य लगा कि इतनी सुबह कौन-सा सत्संग हो सकता है और वे भी साथ चले गये। पिताजी ने सभा में, बाबा की मुरली सुनी और उन्हें अहसास हो गया कि सचमुच भगवान धरती पर आ चुके हैं। उन्होंने घर में आकर माताजी को बताया। वे कहने लगी, ऐसा तो हो नहीं सकता कि भगवान धरती पर आ जाये।

तोतली बातों का असर

उस समय मेरी आयु 5 वर्ष थी। अगले दिन माताजी तो जाने को तैयार नहीं हुई, पिताजी हम चार भाई-बहनों को लेकर बाबा के सामने मुरली सुनने पहुँच गये। हम बच्चों को बहुत अच्छा लगा और घर लौटकर हम सबने माताजी को कहना शुरू कर दिया कि भगवान आ गये हैं। हम बच्चों की तोतली बातों का माँ पर इतना असर हुआ कि वे भी निश्चयबुद्धि बन मुरली सुनने जाने लगी। जितने दिन बाबा वहाँ रहे, हम रोज जाते रहे।

आज भी याद है बाबा का एक्शन

सन् 1965 में मम्मा के दिवंगत होने के तुरंत बाद माता-पिता के साथ मेरा मधुबन बाबा से मिलने जाना हुआ। मधुबन में बड़ी शान्ति की अनुभूति हुई। बाबा को देखकर इतना अपनापन आता था मानो यही हमारा घर है। बाबा में इतना आकर्षण था जो हम सब बच्चे उनके पीछे-पीछे ही रहते थे। एक बार पार्टी से मिलते समय बाबा ने मुझे गोद में लिया। मुझे लगा जैसे बाबा रूई की तरह कोमल और हल्के हैं। हिस्ट्री हॉल में बाबा की संदली के पास माताजी मुझे बिठा देती थी। जैसे ही बाबा दरवाजे से प्रवेश करते, हममें जागृति और उत्साह आ जाता था। एक बार बाबा ने मुरली में कहा, जैसे मक्खी अभी यहाँ बैठी है और अभी उड़ गई, पाँच हजार वर्ष बाद भी यह ऐसे ही बैठेगी और उड़ेगी। उसमें बाबा ने जो एक्शन किया, वो मुझे आज तक याद रह गया।

दिल की हर बात हुई पूरी

एक बार झोंपड़ी में बाबा सबसे मिल रहे थे। बाबा ने गोद में लिया, सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची सेवा करेगी। दीदी मनमोहिनी पास में बैठे थे। बाबा ने मुझे फ्राक सौगात दी। बाबा के पास प्लेट में चांदी की अंगुठियाँ पड़ी थी। मैं बाबा के पास दुबारा गई। बाबा ने मुझे अंगूठी भी पहना दी। मुझे बड़ी खुशी हुई कि बाबा कितना अपना है, फ्राक भी दी, अंगूठी भी दी। मन को लगा कि बाबा दिल की हर बात पूरी करता है।

पढ़ाई में बाबा की मदद

बाबा से मिलकर घर लौटी, स्कूल गई तो मधुबन का दृश्य मन में घूमता रहा। पढ़ाई में भी बाबा की बहुत मदद मिलती रही। मैं बाबा को कहती थी, बाबा परीक्षा में वही प्रश्न आना चाहिए जो आपकी मुरली पढ़ने के बाद मैंने याद किया है। कमाल बाबा की, ऐसा ही होता था, इससे बाबा पर निश्चय दृढ़ हो गया। पढ़ाई के दिनों में बाबा की सेवा के लिए जब हाँ जी करती थी तो होमवर्क बहुत जल्दी हो जाता था, पाठ याद भी सहज हो जाता था। जब सेवा में आनाकानी करती थी तो होमवर्क भी नहीं हो पाता था। स्कूल में टीचर की डांट या बच्चों की लड़ाई का सामना करना पड़ता था। इससे मुझे यह निश्चय हो गया कि बाबा

का साथ जीवन में बहुत आवश्यक है।

साकार को देखा अव्यक्त रूप में

सेन्टर का वातावरण इतना आकर्षित करता था कि जल्दी से जल्दी सेवा में लग जाने की रुचि होती थी। ग्यारवीं कक्षा की परीक्षा देते ही मैं सेवाकेन्द्र पर आ गई। साल भर बाद मैं बाबा से मिलने मधुबन आई। बाबा गुलजार दादी के तन में आये हिस्ट्री हॉल में। जब मैं बाबा के सामने गई तो मुझे पक्का निश्चय नहीं था कि गुलजार दादी के तन में ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा दोनों हैं। जब बाबा की दृष्टि पड़ी तो बाबा ने कहा, बच्ची, सेवा पर आ गई हो ना। तब मुझे लगा, यह वही बाबा है जिसने झोंपड़ी में मुझे सेवा का वरदान दिया था। उस समय गुलजार दादी तो थी नहीं। बाबा ने ही वरदान दिया था और बाबा ही अब अपनी वरदान प्राप्त बच्ची को सामने देख खुश हो रहे हैं। ऐसा मुझे अनुभव हुआ। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा को अव्यक्त रूप में देख साकार पालना के दिन याद आये और मन झूम उठा कि बाबा कल भी हमारे साथ थे, आज भी साथ हैं और कल भी साथ रहेंगे। ❖

श्रद्धांजलि

बापदादा की तथा दैवी परिवार की अति स्नेही, सहयोगी और सदा बाबा के प्यार में डूबी रहने वाली आंटी (यज्ञ में इसी सम्बोधन से जानी जाने वाली) बेटी (Betty) तथा अंकल स्टीव नारायण जी (गयाना के पूर्व राष्ट्रपति तथा बाबा के अनन्य बच्चे), सन् 1975 में गयाना में ईश्वरीय ज्ञान में आए। आप गयाना में सेवाकेन्द्र खोलने के निमित्त बने। गयाना देश में बाबा की दिल और जिगर से सेवा करने के साथ-साथ आपने भारत की राजधानी दिल्ली में भी कुछ समय लौकिक और अलौकिक सेवाएँ की। तीन साल पहले भ्राता स्टीव नारायण ने बापदादा की गोद ली और एक दिसम्बर, 2016 को अमृतवेले हम सबकी अति-अति स्नेही आंटी बेटी भी भौतिक देह त्याग कर वतन में बापदादा के पास चली गई। आप 88 वर्ष की थी। आपकी एक सुपुत्री गायत्री अमेरीका में ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित है। शेष सारा परिवार भी यज्ञ स्नेही और यज्ञ-सहयोगी है। समस्त दैवी परिवार ऐसी महान योगी, महान ज्ञानी और सच्ची सेवाधारी आत्मा को स्नेह श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

बापदादा के बहुत-बहुत स्नेही, अथक सेवाधारी, बेहद सेवाओं में सम्पूर्ण समर्पित, बाबा के अनन्य रत्न, सबके स्नेही-सहयोगी बालमुरली भाई, जो पिछले 30 वर्षों से तामिलनाडु ज़ोन में, मदुराई सेवाकेन्द्र पर रहकर अपनी बहुत अच्छी सेवायें दे रहे थे। आपने अथक बन उस क्षेत्र में सेवाओं का बहुत अच्छा विस्तार किया। कुछ समय पहले आपके हृदय की बाईपास सर्जरी हुई थी। अभी आप बापदादा से मिलन मनाने के लिए मदुराई से करीब 400 भाई-बहनों का ग्रुप लेकर मधुबन पहुंचे थे। आपने 30 नवम्बर, रात्रि 10 बजे तक सभी का आवास-निवास लिया। उसके पश्चात् आपको हृदय में थोड़ा दर्द महसूस हुआ। फिर ट्रोमा हॉस्पिटल में लेकर गये। वहाँ जाते ही आपने पुराना चोला छोड़ बापदादा की गोद ले ली। ऐसी योगी, तपस्वी, स्नेही, सेवाधारी आत्मा को समस्त दैवी परिवार स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बाबा ने कहा, बच्ची, नम्रता ही आगे बढ़ाएगी

ब्रह्माकुमारी आशा, अम्बाला कैंट (हरियाणा)

मेरा जन्म अम्बाला कैंट (हरियाणा) के एक मध्यमवर्गीय, सात्विक एवं उच्च विचारों वाले परिवार में अगस्त, 1952 में हुआ। माता-पिता दोनों ही बहुत शान्त स्वभाव के थे। बचपन बड़े लाड-प्यार में बीता। शुरू से ही मेरा शान्त स्वभाव रहा है, यह प्रभाव मैंने अपने लौकिक माता-पिता से ही प्राप्त किया है।

एक वृद्ध के साक्षात्कार होने लगे

बाल्यकाल बहुत अच्छे से चल रहा था कि अचानक एक वृद्ध के साक्षात्कार होने लगे। वह बड़े प्यार से कहता, ''बच्ची, मैं परमात्मा आ चुका हूँ, मुझे पहचान बच्ची, मुझे पहचान।'' एक रोशनी उस वृद्ध के तन में प्रवेश होती दिखाई देती, बोलती, ''बच्ची, मुझे पहचान, मैं आ चुका हूँ।'' जब कभी शान्त वातावरण में अकेली होती, यह आवाज बार-बार मेरा पीछा करती। मेरी समझ में कुछ न आता। मैं चुप-चुप, गुमसुम रहने लगी। मेरे इस बदलाव से माता-पिता को भी चिन्ता होने लगी। जब सारी बात उनको बताई तो वे भी थोड़े परेशान हुए। मेरी आयु उस समय लगभग 7 वर्ष की रही होगी।

शुरू कर दिया माता-पिता ने आश्रम जाना

यह अम्बाला कैंट में ईश्वरीय ज्ञान अर्थात् यज्ञ की स्थापना का प्रारम्भिक समय था। दादी जानकी जी अम्बाला कैंट, हलवाई बाजार के सेवास्थान में ईश्वरीय सेवाएँ दे रही थीं। हमारे घर के सामने से एक किशारी लाल भाई आश्रम जाया करते थे। एक बार मैं भी उनके साथ आश्रम चली गई। मैंने जाते ही उस वृद्ध (ब्रह्मा बाबा) को पहचान लिया जिसका मुझे साक्षात्कार होता था। इसके बाद मैं कई बार आश्रम गई और माता-पिता को सब ज्ञान की बातें बताईं। मेरे नित्य-प्रति की ज्ञान-वार्ता से वे इतने प्रभावित हुए कि उन दोनों ने भी आश्रम जाना शुरू कर दिया।

दिल रहता था ईश्वरीय ज्ञान की ओर

उस समय मैं लौकिक पढ़ाई कर रही थी परन्तु मेरा दिल हमेशा आश्रम व ईश्वरीय ज्ञान की ओर ही रहता था। यह सन् 1962-63 की बात है, घरवालों ने मेरी लगन देखकर सही अनुमान लगा लिया कि यह शादी नहीं करेगी तथा ब्रह्माकुमारी ही बन जाएगी। ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में तब भ्रान्तियाँ बहुत थीं अत: मेरा आश्रम जाना बंद कर दिया गया। घर में खींचातानी का-सा माहौल उत्पन्न हो गया। मैंने पहली बार पिताजी के आगे जबान खोली कि यदि आश्रम को अच्छा नहीं समझते तो आप क्यों जाते हो? पिता जी ने अपना जाना भी बन्द कर दिया। अब क्या करूँ? कुछ सूझता नहीं था। मैंने छिप-छिप कर आश्रम जाना शुरू कर दिया। तब तक आश्रम वर्तमान स्थान सब्जी मण्डी में स्थानान्तरित हो चुका था और दादी जानकी जी के स्थान पर ध्यानी दादी व राधा बहन आ चुके थे। समय गुजरता गया और मैं दसवीं कक्षा तक पहुँच गई।

बाबा से मिलने की चटक लग चुकी थी

जीवन की राहें सदा समतल नहीं होतीं, कुछ ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर भी चलना पड़ता है। यह सम्भवत: 1968 की बात है, किशोरी लाल भाई की बेटी सुषमा बहन (जामनगर सेवाकेन्द्र की निमित्त) दीवाली के दिन मधुबन जा रही थी। मैंने भी उनके साथ जाना चाहा, जिद्द भी की परन्तु घर से आज्ञा न मिली। मैंने खाना-पीना बन्द कर दिया। यह क्रम 7 दिन तक चलता रहा (माता का सहयोग मिलता रहा)। रोष प्रकट करते हुए मेरे मुँह से निकल गया कि आप मुझे जाने नहीं देते, आपका बहुत बड़ा नुकसान होगा। इसे दैवयोग ही समझना चहिए कि भाई की नौकरी चली गई। घर वाले इस घटना को दैवी प्रकोप की दृष्टि से

देखने लगे। उन्हें भय था कि यदि यह अब की बार मधुबन चली गई तो कभी वापस घर लौटेगी नहीं। उनका भय था भी सच्चा क्योंकि मुझे बाबा से मिलने की चटक लग चुकी थी। मैं प्यारे बाबा से एक बार 1963 में मधुबन में मिल चुकी थी, तब मैं 15 दिन बाबा के पास रही थी। तब मेरी आयु केवल 13 साल की थी। बाबा ने मुझे देखते ही कहा था, ''यह मेरी कल्प पहले वाली बच्ची है, यह मेरी है, मेरी ही रहेगी।'' इस बात ने मुझे और भी दृढ़ बना दिया। बाबा के साथ पहली मुलाकात का अनुभव याद करके अब भी रोम-रोम हर्षित हो जाता है। बाबा ने दृष्टि देते हुए कहा था, ''बच्ची! निर्मानचित्त बनो, नम्रता ही आगे बढ़ाएगी, अपनेपन का नशा त्याग करके झुकने में कोई बुराई नहीं है।'' बाबा के इन वरदानों ने निर्मानचित्त बना दिया, झुकना सिखा दिया। कितने भी कड़े स्वभाव वाला व्यक्ति मेरे सम्पर्क में आया, इन वरदानों के कारण मेरा कभी किसी से टकराव नहीं हुआ। बाबा ने कहा था, ''बच्ची, तुझे सब के गुण देखने हैं।'' यह वरदान आज भी कार्य कर रहा है। किसी की बुराई कोई सुनाता भी है तो मुझे वह भूल जाती है, विशेषता याद रह जाती है।

बाजार की खाद्य वस्तु पर कभी नहीं गई नजर

मम्मा मुझे झूले में झुलाती थी, बहुत प्यार करती थी, कहती थी, ''यह बिछड़ी हुई बच्ची अपने घर में आई है।'' एक बार मम्मा अम्बाला आई हुई थीं, पिकनिक पार्टी थी। मैंने कहा, ''मम्मा, बाजार के गोल-गप्पे बहुत अच्छे लगते हैं।'' मम्मा ने गोद में लिया, प्यार किया और बहुत मीठी दृष्टि दी। मम्मा ने कहा, ''आज मैं तुझे बाजार जैसे गोल-गप्पे पेट भर खिलाऊँगी, फिर बाजार के कभी न खाना।'' मम्मा की शक्तिशाली दृष्टि ने मेरे में वह शक्ति भर दी, उसके बाद बाजार की किसी भी खाने की वस्तु की तरफ मेरी नजर तक नहीं गई।

बच्ची, तू मेरे पास आ रही है न

जब मम्मा-बाबा की ये शिक्षाएँ, प्यार, दुलार याद आता था तो मन करता था, सारे बन्धन तोड़ कर उड़ कर मधुबन चली जाऊँ और समर्पित हो जाऊँ परन्तु घरवाले आज्ञा नहीं देते थे और बिना आज्ञा के मधुबन वाले समर्पित नहीं करते थे। घर में बड़ा घुटन भरा वातावरण बना हुआ था। एक रात बाबा ने मुझे

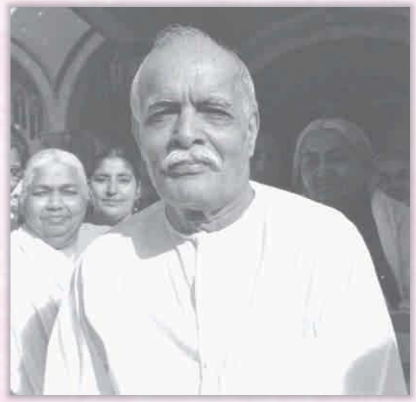

स्वप्न में पूछा, ''बच्ची! तू मेरे पास आ रही है न, आ रही है न बच्ची!'' मैंने कहा, ''बाबा! घर वाले छुट्टी नहीं देते, कहते हैं, मैट्रिक की परीक्षा के बाद जाना, बाबा, मैं क्या करूँ?'' बाबा ने कहा, ''उस समय यदि मैं न मिला तो।'' दूसरे दिन मैंने स्वप्न में देखा कि बाबा एक बहुत सुन्दर रथ पर खड़े हैं और बच्चों को टा-टा कर रहे हैं। मैंने सोचा, बाबा दिल्ली या मुम्बई जाएंगे, मैं भी मिलने वहाँ चली जाऊँगी।

भाई को नौकरी पुनः मिल गई

परन्तु 18 जनवरी, 1969 को बाबा ने शरीर छोड़ दिया। मन को बहुत कष्ट हुआ। मुझे लगा, बाबा ने तो मुझे सब कुछ बताया परन्तु मैं अल्पबुद्धि होने के कारण समझ न सकी। मैंने सोचा, बाबा के जो बच्चे बनने थे, बन गए। मैं तो रह गई। इसी उधेड़बुन में रात को सोई, स्वप्न में देखा कि बहुत सुन्दर स्टीमर जा रहा है, मैं छलांग लगाकर स्टीमर में चढ़ गई। ऐसा लगा मानो प्यारे बाबा ने मुझे अपना बना लिया। पिता जी की शर्त अनुसार दसवीं की परीक्षा देने के बाद मधुबन जाने एवं समर्पण होने की लगन बढ़ती गई। फिर सुना कि मई, 1969 में कुमारियों की ट्रेनिंग है। उसमें जाने की आज्ञा मिल गई। इसे केवल इतफाक ही कहें कि ज्योंहि आज्ञा दी गई, भाई की खोई हुई नौकरी पुनः मिल गई।

समाप्त हो गए सभी लौकिक बन्धन

ट्रेनिंग के उपरान्त मैं पटना गई। पटना में एक बार दादी

निर्मलशान्ता आईं, मैं कुछ अस्वस्थ थी। दादी निर्मलशान्ता ने बड़े प्यार से अपने हाथों से ब्रह्माभोजन खिलाया तो बिल्कुल स्वस्थ हो गई। दिल्ली (पालम) में तीन साल सेवाएँ दीं। आदरणीया बहनों का भरपूर प्यार मिला। कई यादें भुलाए नहीं भूलती हैं। एक बार दीदी मनमोहिनी जी के साथ पंजाब का चक्कर लगाने जाना था। अचानक मैं बीमार हो गई। दीदी जी के पास एक डॉक्टर भी बैठे थे। उनको दीदी ने कहा, आपको इसे ठीक करना है, चाहे कुछ भी हो, इसे आपको सौंपती हूँ, मुझे समाचार मिलना चाहिए, ठीक हो गई है। प्यारी दीदी जी ने उनमें तथा मुझमें इतनी शक्ति भर दी कि जब वे आईं, मैं बिल्कुल ठीक हो चुकी थी।

मैं सभी से संतुष्ट हूँ

सन् 1978 से अम्बाला में ही कृष्णा बहन जी के सान्निध्य में सेवाएँ दे रही हूँ। बाबा सब कार्य करा लेता है। हिम्मत का कदम मैं रखती हूँ, बाबा की हर समय सौ गुणा मदद मिल जाती है। मैं सभी से सन्तुष्ट हूँ, मुझे आशा है, मेरे से भी सभी सन्तुष्ट होंगे। अपने जीवन से भी मुझे कभी कोई शिकायत नहीं रही। हाँ, शरीर से कभी-कभी शिकायत अवश्य रहती है, वह भी थोड़े समय के लिए। बाबा के ज्ञान और मुरलियों से तुरन्त ही इसका भी समाधान मिल जाता है। बाबा कहते हैं, ''बच्ची! हिसाब-किताब चुक्ता हो रहा है।'' बड़ी बहन कृष्णा जी का हर कदम पर सहयोग प्राप्त होता रहता है। अब तो एक ही इच्छा है कि जब भी दम निकले बाबा के हाथ में हाथ हो, बाबा की गोद में ही दम निकले। ❖

नया वर्ष करता आह्वान

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी., गुड़गाँव

हर चेहरे पे सदा मुसकान, खुशियों की हो ये पहचान।
पावनता की सरगम गूँजे, नया वर्ष करता आह्वान।।

आओ आज भूला दें वो पल, जिनमें द्वन्द्व और संघर्ष भरा।
शुभ संकल्पों, शुभ भावों से, महका दें ये वसुन्धरा।।
नूतन राहें, नूतन चाहें, नूतनता का रचें विधान।
पावनता की सरगम गूँजे, नया वर्ष करता आह्वान।।

संस्कृति में संस्कारों के निर्मल हार पिरोकर के।
मानवता में दिव्य गुणों के सुमन नित्य संजोकर के।।
जन-जन के जीवन में सच्चा स्नेह और हो सम्मान।
पावनता की सरगम गूँजे, नया वर्ष करता आह्वान।।

पग-पग में आशा की कलियाँ, जीवन में बहती समरसता।
हृदय सरल, मन विमल सदा, चहुँ ओर सजे सज्जनता।।
रोशन घर-घर, द्वारे-द्वारे, सबका जीवन हो वरदान।
पावनता की सरगम गूँजे, नया वर्ष करता आह्वान।।

नये वर्ष में नये सिले, दिल से दिल के तार मिलें।
जीवन बगिया महकी-महकी, सद्भावों के पुष्प खिलें।।
नये-नये अहसासों का, जीवन गाता जाए गान।
पावनता की सरगम गूँजे, नया वर्ष करता आह्वान।।

आदर्श राजयोगी...पृष्ठ 18 का शेष

ब्रह्मा बाबा ने जवाब दिया, बाबा, यज्ञ आपका है, रुद्र यज्ञ है, ब्रह्मा यज्ञ नहीं है, इसके लिए आप जानो। शिव बाबा ने फिर पूछा कि क्या आपको बच्चे याद नहीं आयेंगे? ब्रह्मा बाबा ने जवाब दिया कि बच्चे आपके हैं, मेरे नहीं, मैं खुद आपका बच्चा हूँ। ऐसे थे आदर्श राजयोगी, कर्मयोगी, सहजयोगी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा जिन्होंने संसार सागर की लहरों को पार करते हुए हमारे लिए सबूत प्रस्तुत किया। आज भी बाबा साथ हैं और संग-संग हर कर्म करा रहे हैं। अपने समान बना रहे हैं। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510,
आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▸▸ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.गुरुग्राम (पालम विहार)-सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के उद्घाटन के पश्चात् पदमश्री भ्राता के.सी.जोहोरे, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति भ्राता वी.ईश्वरैया, ब्र.कु.उर्मिला बहन, डॉ.जी.प्रसन्ना कुमार, ब्र.कु.सुदेश बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **2.ओ.आर.सी.(गुरुग्राम)**-केन्द्रीय मानव संसाधन और विकास राज्यमंत्री भ्राता उपेन्द्र कुशवाहा को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.लक्ष्मी बहन, ब्र.कु.फलक बहन तथा अन्य उनके साथ। **3.ओर.आर.सी.(गुरुग्राम)**- भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम 'मधुमेह नियंत्रित भारत अभियान' का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के निदेशक डॉ.ईश्वर आचार्य, स्वामी विवेकानंद योगा अनुसंधान संस्थान के उप-कुलपति डॉ.नागेन्द्र, ब्र.कु.आशा बहन, अखिल भारतीय चिकित्सा संस्थान के डॉ.हेमन्त तथा अन्य। **4.जनकपुर (नेपाल)**-ज्ञान-चर्चा के बाद नेपाल के पर्यावरण और जनसंख्या मंत्री भ्राता जयदेव जोशी, ब्र.कु.सृजना बहन, ब्र.कु.कोमल बहन, पत्रकार भ्राता रामाशीष तथा अन्य समूह चित्र में। **5.इंदौर (विद्या नगर)**- लन्दन (यू.के.) के उपमहापौर भ्राता राजेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुमित्रा बहन। साथ में हैं पूर्व विधायक तुलसी सिलावट तथा अन्य। **6.गुवाहाटी**- कार रैली कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता कृष्णेन्दु पाल, डॉ.राजगोपाल रेड्डी, ब्र.कु.शीला बहन तथा ब्र.कु.दीपा बहन। **7.सोनीपत (सेक्टर-15)**- गीता जयंती समारोह में हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष भ्राता कंवरलाल गुर्जर, ब्र.कु.प्रमोद बहन को सम्मानित करते हुए। **8.कटक**- 'गुडबाई डायबिटीज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं डॉ.एस.एन.दास, डॉ.शक्तिप्रसाद दास, ब्र.कु.डॉ.श्रीमन्त भाई, ब्र.कु.कमलेश बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : January, 2017.

शान्तिवन (आबू रोड)- महिला प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. चक्रधारी बहन, ब्र.कु. निर्वैर भाई, राजस्थान की महिला तथा बाल विकास राज्यमंत्री बहन अनिता भदेल, जबलपुर नगरनिगम अध्यक्षा बहन सुमित्रा बाल्मिकी, सह पुलिस अधीक्षक सिरोही डॉ.प्रेरणा शेखावत तथा अन्य।

शान्तिवन- 'परमात्म शक्ति द्वारा सनातन संस्कृति की स्थापना' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी बहन, स्वामी कौशल किशोर दास वेदान्ताचार्य, साध्वी विभानंद, ब्रह्माकुमार भ्राता निर्वैर, स्वामी माधवानंद तथा सद्गुरु भाऊ महाराज।

रायपुर (शान्ति सरोवर)- 'ईश्वरीय ज्ञान द्वारा विश्व परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. मंजू बहन तथा एम्स, रायपुर के निदेशक डॉ. नितिन एम. नागरकर।